

BHARATHI COLLEGE OF EDUCATION



An abode of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

B.Ed.

Session – 2020-22

EPC- 3

External

Project Report on

Critical Understanding of ICT

Guided by –
VIVEK RAJ JAISWAL

Submitted by –
Name – Archana Kerketta
Roll no – 22

WOLTAGNADU COLLEGE OF ENGINEERING BANGALURU



An abode of Education
Kandri, Mandar, Ranche

B.Eg.

Session - 2020-22

ENG-3

Networks

Project Report on

Critical Understanding of ICT

Guided by: _____
Submitted by: _____
Roll no: _____

प्रमाण – पत्र

यह प्रमाणित किया जाता है कि **अर्चना केरकेट्टा**, क्रमांक – 22

बी0एड0 प्रथम वर्ष की प्रशिक्षु ने EPC – 3 में 'Critical Understanding of ICT' को व्याख्याता **विवेक राज जयसवाल** के देखरेख में परियोजना कार्य के रूप में सफलतापूर्वक सम्पन्न किया गया।

इस अवधि में इनका कार्य सहयोगात्मक एवं सराहनीय रहा।
मैं इनकी उज्ज्वल भविष्य की कामना करती हूँ।

प्रशिक्षु का नाम – अर्चना केरकेट्टा

कक्षा – बी0एड0 (प्रथम वर्ष)

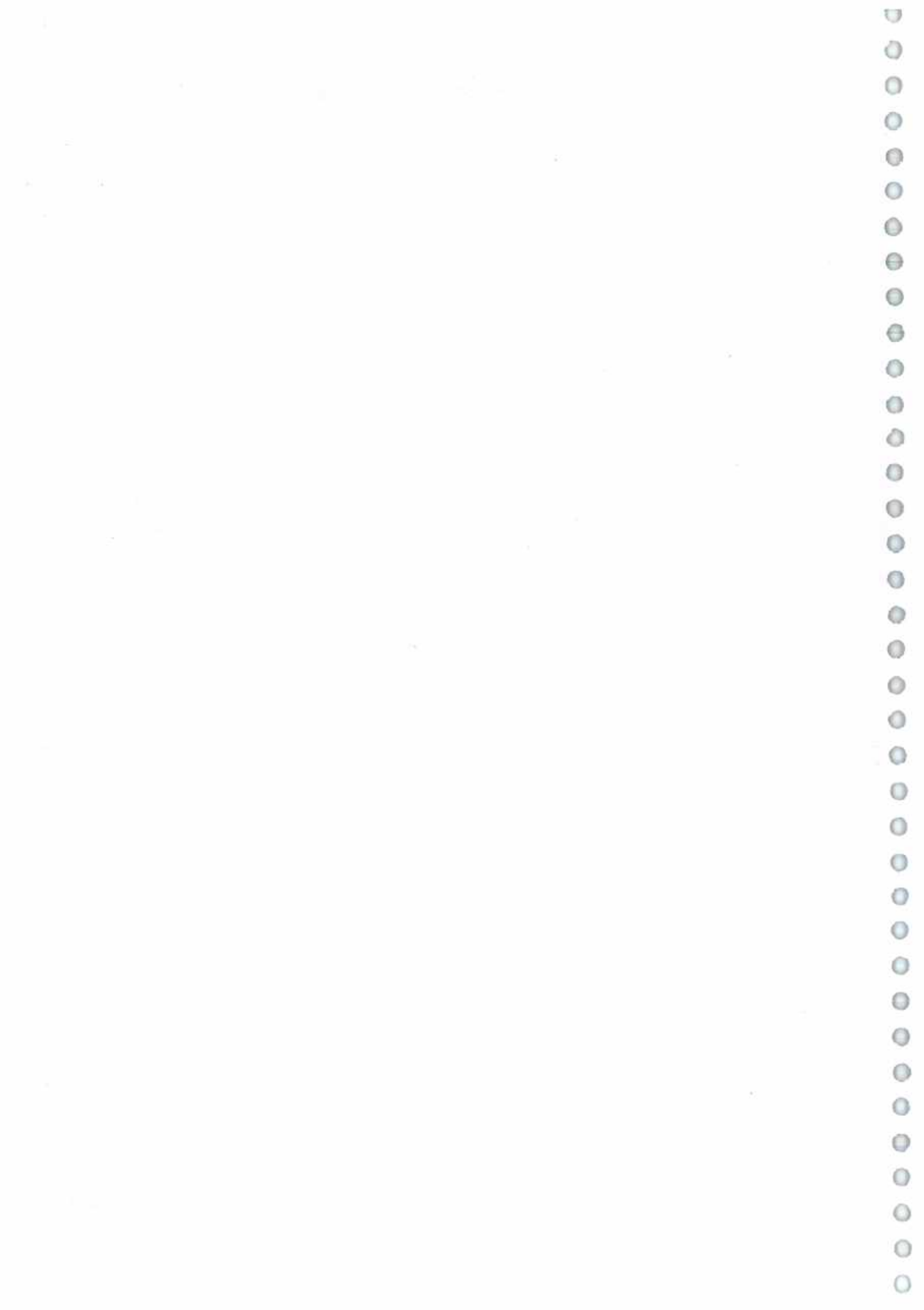
क्रमांक – 22

सत्र – 2020-22

व्याख्याता का नाम

विवेक राज जयसवाल

व्याख्याता का हस्ताक्षर



आभार ज्ञापन

बी०एड० की प्रशिक्षु होने के नाते मेरे लिए यह बड़े सौभाग्य की बात है कि मुझे EPC – III के प्रोजेक्ट कार्य “Critical Understanding of ICT” पर अध्ययन करने का अवसर प्राप्त हुआ। इस प्रोजेक्ट कार्य के दौरान मुझे इस विषय से सम्बंधित अनेक जानकारियाँ मिली।

इस प्रोजेक्ट कार्य को प्रस्तुत करने में हमारी शैक्षणिक सचिव दीपाली परासर , प्रभारी प्राचार्य राकेश कुमार राय एवं व्याख्याता विवेक राज जयसवाल ने विशेष योगदान दिया, जिसके लिए मैं आप सभी को विशेष आभार एवं हार्दिक कृतज्ञता का भाव व्यक्त करती हूँ।

मैं अपने माता-पिता सभी मित्रों एवं परिजनों को धन्यवाद देती हूँ। जिन्होंने प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से मेरे प्रोजेक्ट कार्य में सहयोग प्रदान किया ।

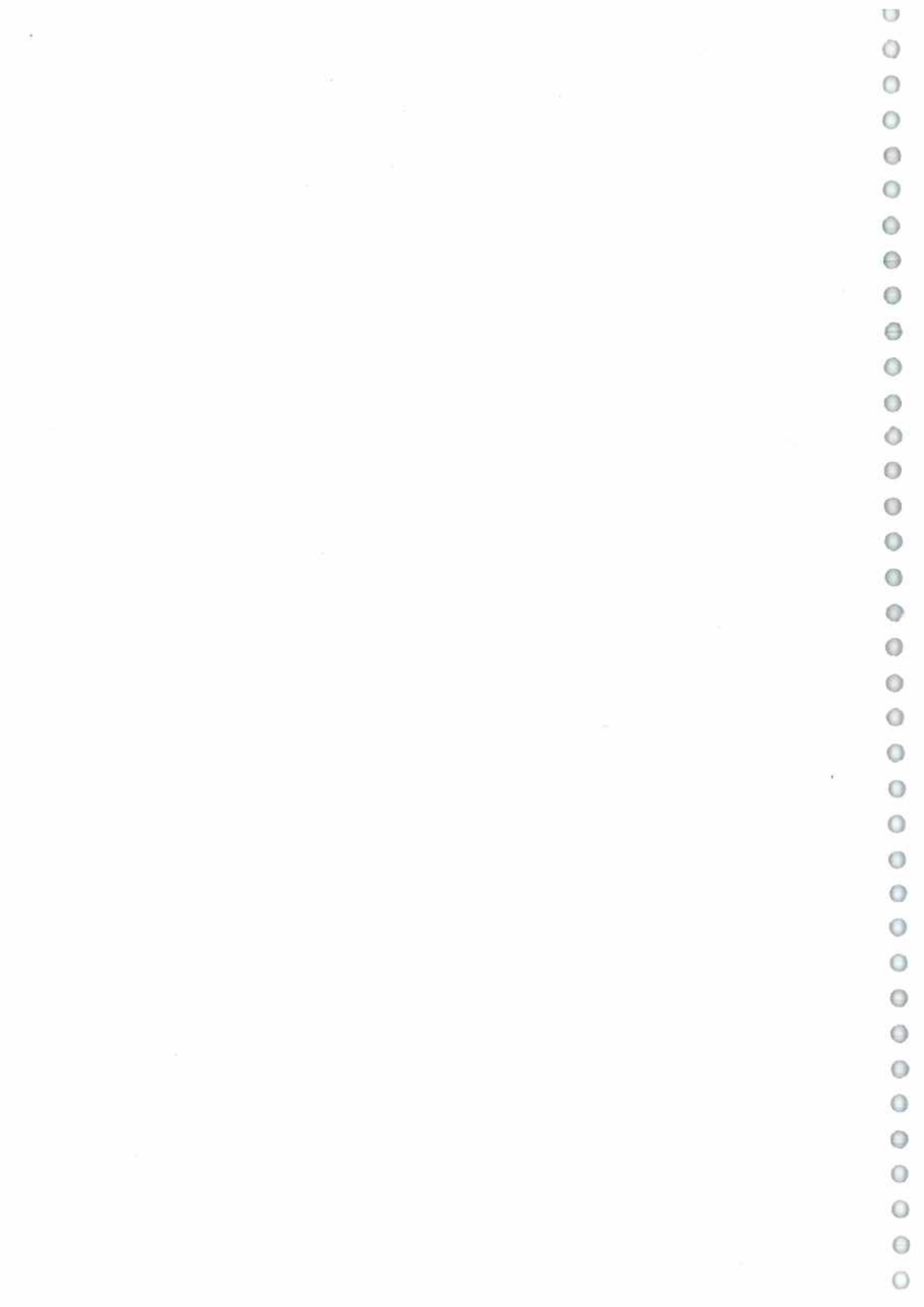
धन्यवाद !

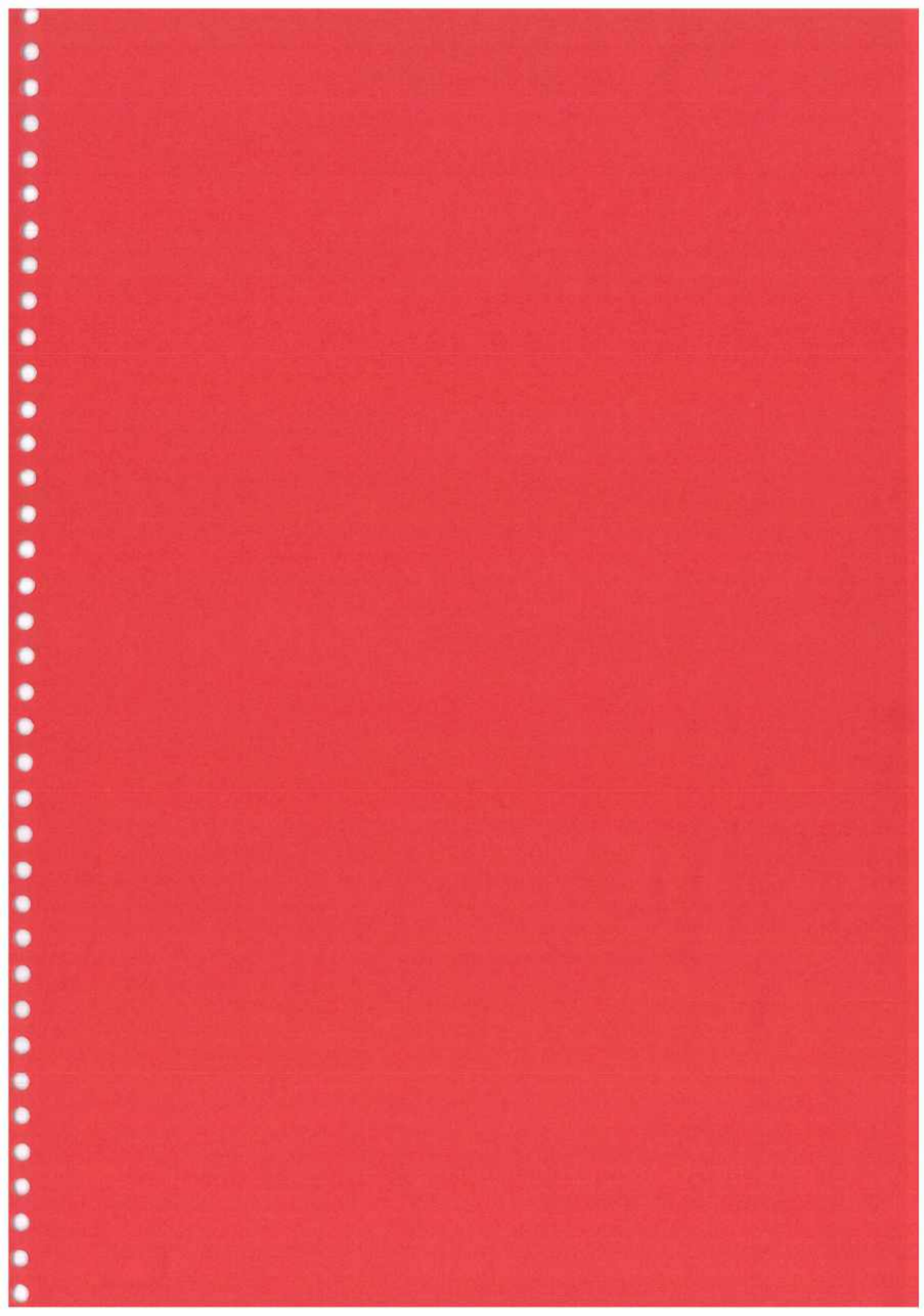
प्रशिक्षु का नाम – अर्चना कैरकेट्टा

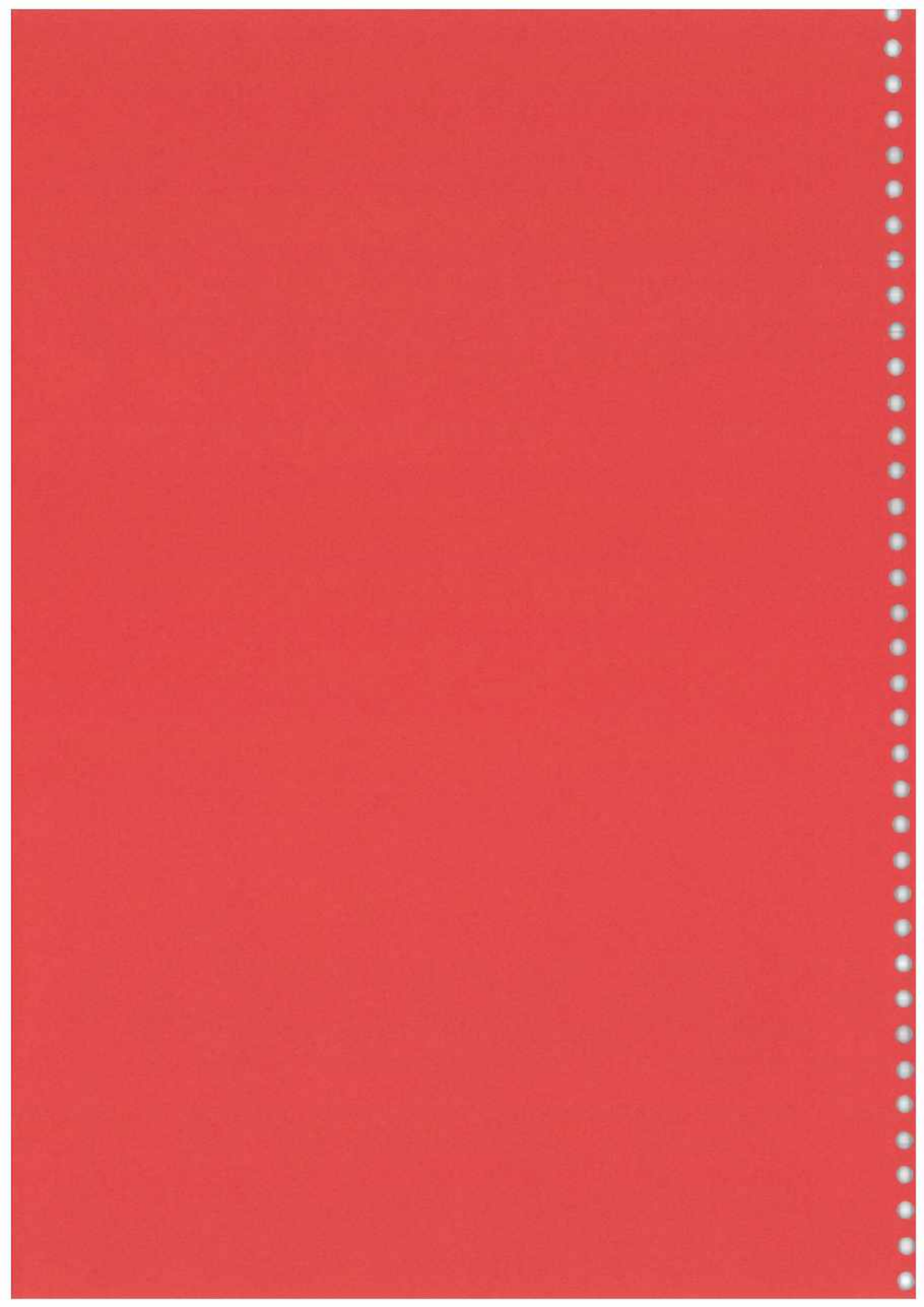
रोल न० – 22

कक्षा : बी०एड० (प्रथम वर्ष)

सत्र – 2020-22







INDEX

S.NO	QUESTION	PAGE NO.	REMARK
1.	ICT से आप क्या समझते हैं ? शिक्षा के क्षेत्र में ICT की आवश्यकता एवं महत्व का वर्णन करें ।	1-6	
2.	शैक्षिक तकनीकी से आप क्या समझते हैं ? शिक्षा के क्षेत्र में इसके योगदान का वर्णन करें ।	7-12	
3.	इंटरनेट और संचार उपग्रह की व्याख्या करें ।	13-19	

Ankur

INDEX

1. Introduction to the study of the history of the world
2. The world in the 19th century
3. The world in the 20th century
4. The world in the 21st century

5. The world in the 22nd century
6. The world in the 23rd century
7. The world in the 24th century
8. The world in the 25th century

9. The world in the 26th century
10. The world in the 27th century
11. The world in the 28th century
12. The world in the 29th century



Q. (1) ICT से आप क्या समझते हैं ?
शिक्षा के क्षेत्र में ICT की आवश्यकता
एवं महत्व का वर्णन करें ।

⇒ आईसीटी का पूरा नाम Information and Communication Technology हिन्दी में इसे सूचना एवं संप्रेषण तकनीकी कहा जाता है । यह सूचनाओं का आदान-प्रदान करने का एक माध्यम है । इन्फार्मेशन एक कम्युनिकेशन टेक्नोलॉजी के जरिए अपनी विचारी सूचनाओं को दूसरी तक पहुँचा सकते हैं ।

इस डिजिटल दुनिया में Information और Communication के लिए जिन Technology का इस्तेमाल होता है वो सभी ICT के अंतर्गत ही आती हैं । और सूचना और संचार की प्रायोगिकी को सामान्यता ICT कहा जाता है । आज हम कंप्यूटर, मॉबाइल और अन्य उपकरण ही इंटरनेट से connect हो पा रहे हैं इसके द्वारा ही आपका कोई भी डिवाइस इंटरनेट कनेक्ट हो पाता है । इसके अंतर्गत कई प्रकार की अलग-अलग टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल किया जाता है ।



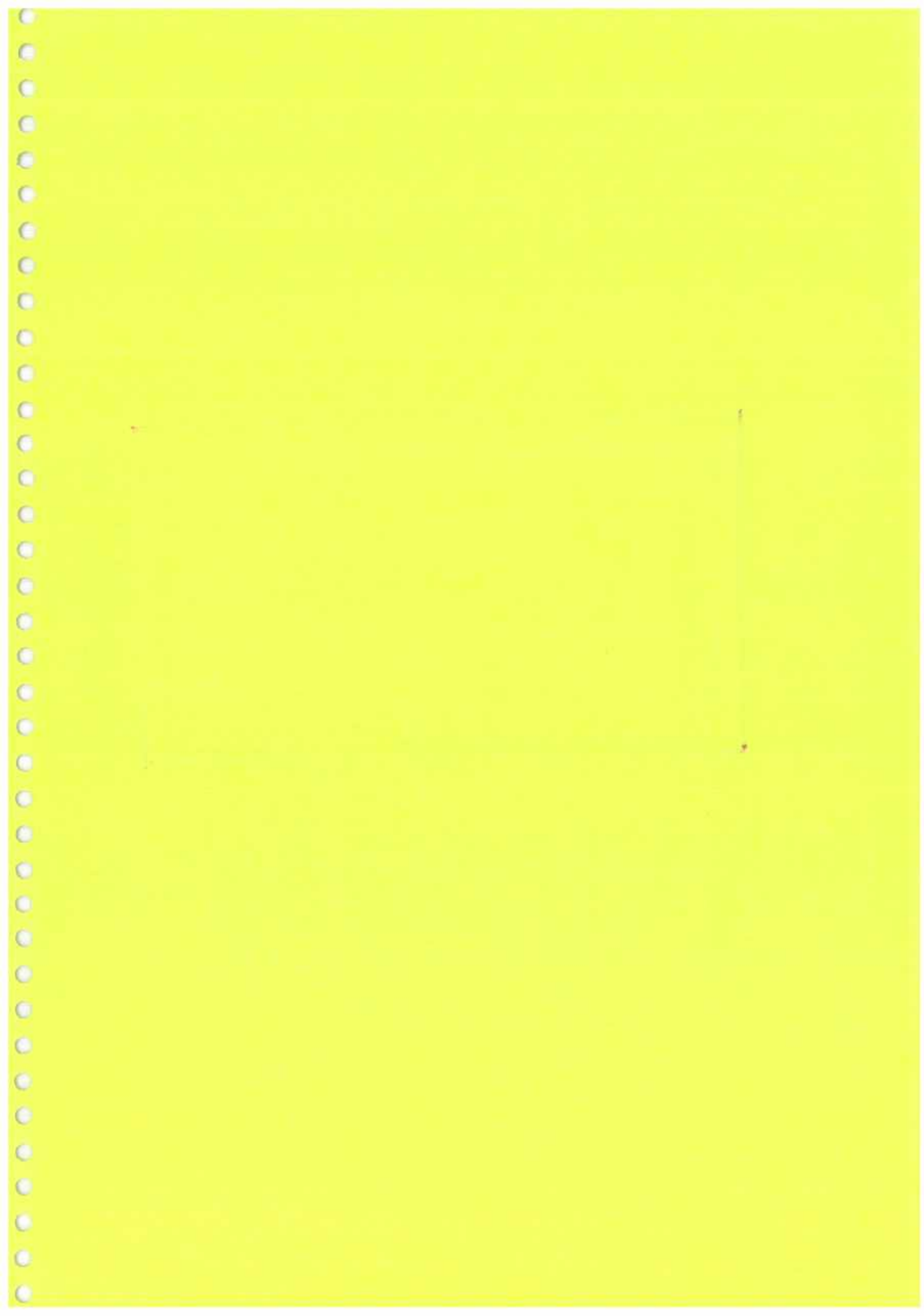


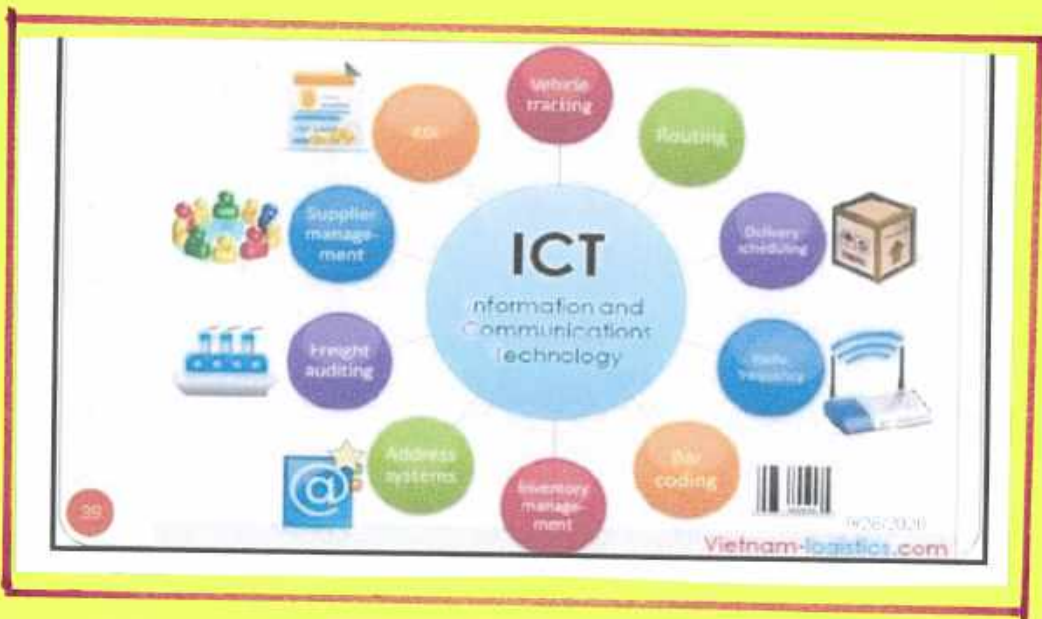
1. $\frac{1}{x^2} = x^{-2}$ $\frac{d}{dx} x^{-2} = -2x^{-3} = -\frac{2}{x^3}$
 2. $\frac{1}{x^3} = x^{-3}$ $\frac{d}{dx} x^{-3} = -3x^{-4} = -\frac{3}{x^4}$
 3. $\frac{1}{x^4} = x^{-4}$ $\frac{d}{dx} x^{-4} = -4x^{-5} = -\frac{4}{x^5}$
 4. $\frac{1}{x^5} = x^{-5}$ $\frac{d}{dx} x^{-5} = -5x^{-6} = -\frac{5}{x^6}$
 5. $\frac{1}{x^6} = x^{-6}$ $\frac{d}{dx} x^{-6} = -6x^{-7} = -\frac{6}{x^7}$
 6. $\frac{1}{x^7} = x^{-7}$ $\frac{d}{dx} x^{-7} = -7x^{-8} = -\frac{7}{x^8}$
 7. $\frac{1}{x^8} = x^{-8}$ $\frac{d}{dx} x^{-8} = -8x^{-9} = -\frac{8}{x^9}$
 8. $\frac{1}{x^9} = x^{-9}$ $\frac{d}{dx} x^{-9} = -9x^{-10} = -\frac{9}{x^{10}}$
 9. $\frac{1}{x^{10}} = x^{-10}$ $\frac{d}{dx} x^{-10} = -10x^{-11} = -\frac{10}{x^{11}}$

Derivatives of Inverse Trigonometric Functions

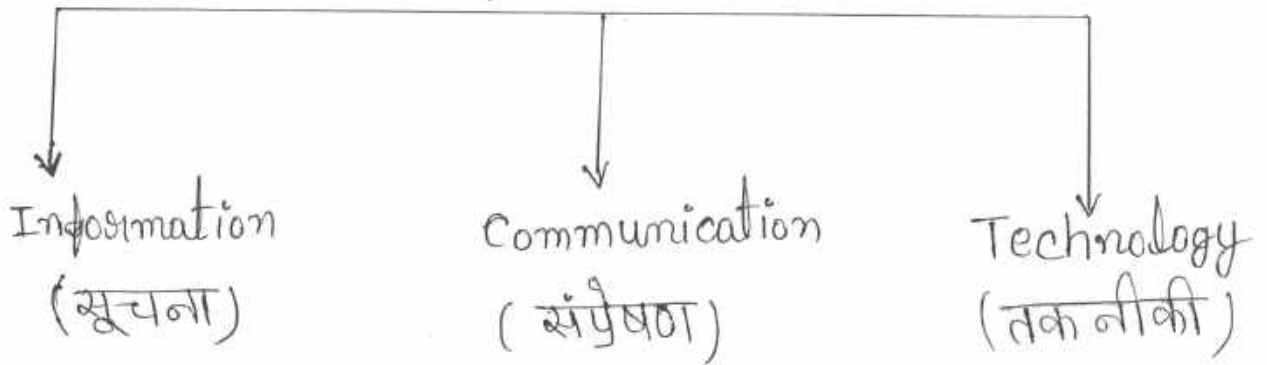
1. $\frac{d}{dx} \sin^{-1} x = \frac{1}{\sqrt{1-x^2}}$
 2. $\frac{d}{dx} \cos^{-1} x = \frac{-1}{\sqrt{1-x^2}}$
 3. $\frac{d}{dx} \tan^{-1} x = \frac{1}{1+x^2}$
 4. $\frac{d}{dx} \cot^{-1} x = \frac{-1}{1+x^2}$
 5. $\frac{d}{dx} \sec^{-1} x = \frac{1}{x\sqrt{x^2-1}}$
 6. $\frac{d}{dx} \csc^{-1} x = \frac{-1}{x\sqrt{x^2-1}}$
 7. $\frac{d}{dx} \sin^{-1} \frac{x}{a} = \frac{1}{\sqrt{a^2-x^2}}$
 8. $\frac{d}{dx} \cos^{-1} \frac{x}{a} = \frac{-1}{\sqrt{a^2-x^2}}$
 9. $\frac{d}{dx} \tan^{-1} \frac{x}{a} = \frac{1}{a^2+x^2}$
 10. $\frac{d}{dx} \cot^{-1} \frac{x}{a} = \frac{-1}{a^2+x^2}$
 11. $\frac{d}{dx} \sec^{-1} \frac{x}{a} = \frac{1}{x\sqrt{x^2-a^2}}$
 12. $\frac{d}{dx} \csc^{-1} \frac{x}{a} = \frac{-1}{x\sqrt{x^2-a^2}}$





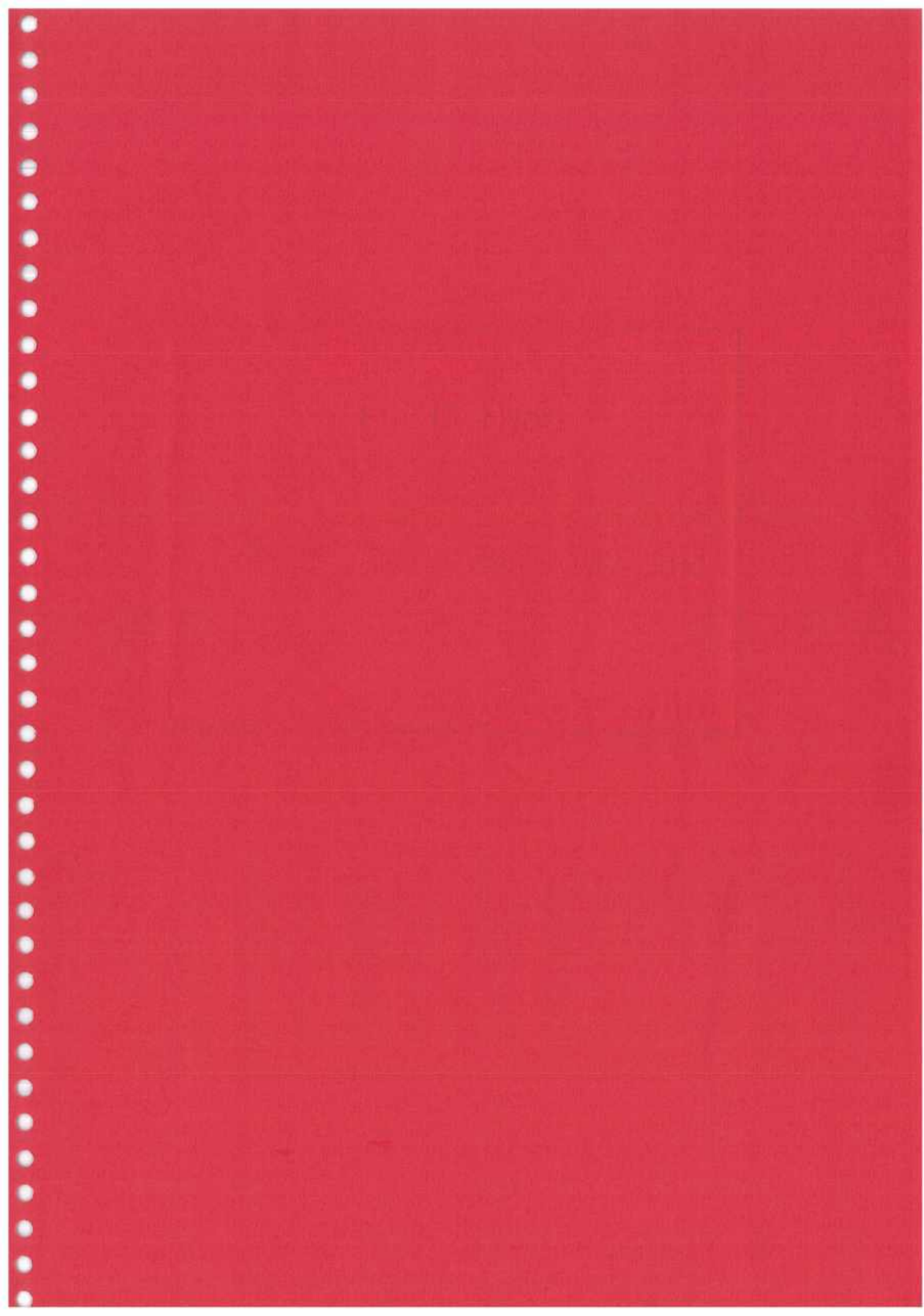


I.C.T



सूचना एक मानवीय विचार है मनुष्य एक सामाजिक प्राणी होने के कारण मानवीय गतिविधियाँ से सीधा जुड़ा रहता है। सूचना का उपयोग जिस रूप में जीव विज्ञान व ग्रन्थावली में करते हैं, उसे तथ्य कहते हैं यह एक उत्तेजना है।

जब हम किसी सूचना या विषय से संबंधित तथ्यों को दूसरे लोगों को बताते हैं। या सूचित करते तो उसे संप्रेषण कहते हैं। और इसी संप्रेषण को जब हम इंटरनेट वायरलेस नेटवर्क, सेल फोन और अन्य संचार माध्यम शामिल हैं को ही तकनीक कहते हैं।





शिक्षा के क्षेत्र में ICT की आवश्यकता एवं महत्व :-

संचार और सूचना प्रौद्योगिकी (आई सी टी) की महत्व की मान्यता प्रदान करते हुए मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने मिशन दस्तावेजों के अनुसार आईसीएच का पर्याग शिक्षा में एक उपकरण की भांति किया है। जिसका उद्देश्य उच्च शिक्षा में वर्तमान नामांकन की दर जो 15 प्रतिशत है 11वीं योजना की समाप्ति तक बढ़ाकर 30 प्रतिशत करना है।

मंत्रालय ने 'सशक्त' नामक वेब पोर्टल भी प्रारंभ किया है, जो वन स्टॉप शिक्षा पोर्टल है। उच्च गुणवत्ता वाली ई-विषय वस्तु सभी विषय क्षेत्रों और विषयों पर सशक्त में अपलोड की जाएगी। अर्न्तक परियोजनाओं समाप्ति की अवस्था पर है तथा इससे भारत में शिक्षण और अधिगम की अवस्था में आमूल परिवर्तन आने की संभावना है। इस समय विभिन्न कक्षाओं, बौद्धिक समक्षताओं तथा ई अधिगम में शोध के लिए उपयुक्त शिक्षा शास्त्र प्रवृत्तियों का विकास परियोजना, आई आई टी द्वारा क्रियांवित की जा रही है। समस्त आई आई टी स्वडगपुर द्वारा क्रियांवित की जा रही है।



विद्यया ऽमृतमश्नुते

१. विद्यया ऽमृतमश्नुते - विद्या ही अमृत है।
 २. विद्या ही अमृत है।
 ३. विद्या ही अमृत है।
 ४. विद्या ही अमृत है।
 ५. विद्या ही अमृत है।
 ६. विद्या ही अमृत है।
 ७. विद्या ही अमृत है।
 ८. विद्या ही अमृत है।
 ९. विद्या ही अमृत है।
 १०. विद्या ही अमृत है।

१. विद्या ही अमृत है।
 २. विद्या ही अमृत है।
 ३. विद्या ही अमृत है।
 ४. विद्या ही अमृत है।
 ५. विद्या ही अमृत है।
 ६. विद्या ही अमृत है।
 ७. विद्या ही अमृत है।
 ८. विद्या ही अमृत है।
 ९. विद्या ही अमृत है।
 १०. विद्या ही अमृत है।



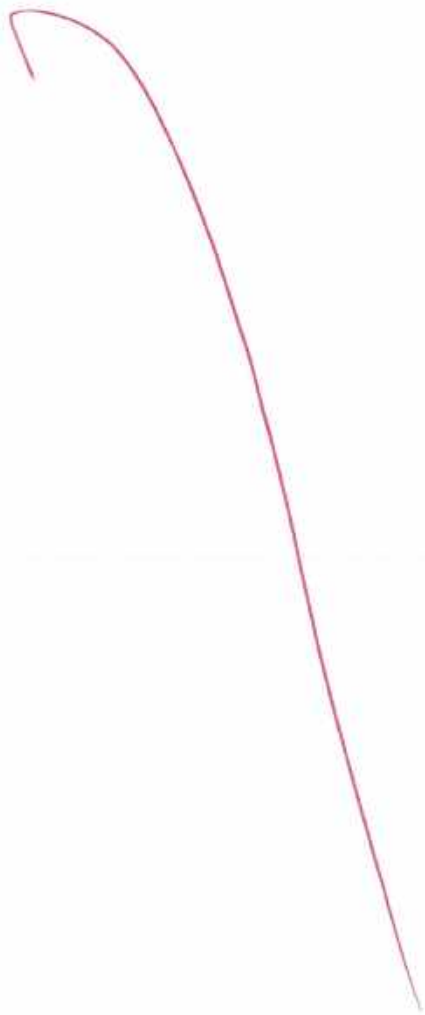
समस्त आई आई टी तथा अनेक रूब आईटी खड़गापुर द्वारा क्रियांविन की जा रही है ।
समस्त आईआईटी तथा अनेक अनआईटी के संबंध द्वारा इस पाठ्यचार्य विकास योजना में प्रतिभागिता की जा रही है ।

राष्ट्रीय शिक्षा मिशन ने सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) के माध्यम से अपने में वर्चुअल लैब्स, ऑपन सोर्स और रक्सस डूल्स, वर्चुअल कांफ्रेंस डूल्स, टॉक टू टीचर कार्यक्रमों तथा नॉन-इन्वेसिव ब्लड ग्लूकोमीटर का सृजन किया है तथा उत्प्रेरित प्रयोगशाला प्रयोगों के लिए एक आई इलेक्ट्रिक फ्रीक्वेंसी शिफ्ट स्प्लीकेशन का विकास किया गया है, जो ली कॉस्ट आस्क्रिप्ट के लिए है ।

मिशन के दो महत्वपूर्ण अवयव हैं

- (i) विषय वस्तु का सृजन तथा
- (ii) संस्थाओं और सीखने वालों के लिए पहुँच उपकरणों हेतु प्रावधान इसका आशय डिजिटल अंतर को कम करना है । अर्थात् उच्च शिक्षा क्षेत्र में शहरी और ग्रामीण शिक्षकों / छात्रों की शिक्षा और अधिगम के प्रयोजना कंप्यूटिंग उपकरणों के प्रयोग के कौशलों में अंतर को कम किया तथा





उन्हे सशक्त बनाया जा अब तक डिजिटल क्रांति से अछूते रहे और ज्ञान अर्थव्यवस्था की मुखधार में शामिल होने में समर्थ नहीं रहे हैं। उपयुक्त शिक्षाशास्त्र पर ध्यान केंद्रित करने वर्चुअल पर्यागशाला के माध्यम से पर्यागों को निष्पादित करने ऑनलाइन टैस्टिंग और प्रमाणन की सुविधा प्रदान करके शिक्षार्थियों का मार्गदर्शन और शिक्षकों की ऑनलाइन उपलब्धता करके उपलब्ध शिक्षा उपग्रह तथा डायरेक्ट-टू-होम (डीटीएच) पद्धतियों का प्रभावशाली पर्याग करने के लिए शिक्षकों को सुदृढ़ता प्रदान करके ई० शिक्षण के उपयुक्त शिक्षाशास्त्र पर ध्यान केंद्रित करने का आशय रखता है।

ICT का महत्व :-

ICT अब एक बुनियादी जरूरत और महत्वपूर्ण है सूचना संचार और पर्यागिकी के महत्व —


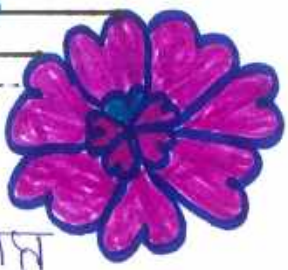
- ICT क्षेत्र में किसी भी देश के आर्थिक विकास पर प्रयत्न और अप्रत्यक्ष दोनों तरह के प्रभाव शामिल हैं।
- आज कई उत्पाद और सेवाएँ जाने-अनजाने ICT क्षेत्र पर निर्भर हैं।

विद्युत् प्रवाह के कारण होने वाले चुंबकीय प्रभाव को विद्युत् चुंबकत्व कहते हैं।
 यह प्रभाव विद्युत् धारा के कारण उत्पन्न होता है।
 विद्युत् चुंबकत्व के कारण ही विद्युत् मोटर, विद्युत् जनित्र, ट्रांसफार्मर
 आदि उपकरणों का निर्माण संभव है।
 विद्युत् चुंबकत्व के कारण ही पृथ्वी पर जीवन का अस्तित्व संभव है।
 विद्युत् चुंबकत्व के कारण ही हमारे आसपास के सभी जीवित प्राणियों
 का अस्तित्व संभव है।
 विद्युत् चुंबकत्व के कारण ही हमारे आसपास के सभी अजीव प्राणियों
 का अस्तित्व संभव है।
 विद्युत् चुंबकत्व के कारण ही हमारे आसपास के सभी अजीव प्राणियों
 का अस्तित्व संभव है।








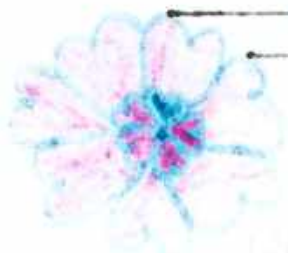
- 
- 
- व्यवसाय विभिन्न तरीकों से ICT का उपयोग उत्पादकता लाभ, ग्राहकों को प्राप्त करने, संगठन की कुशलता को बढ़ाने आदि के लिए करते हैं।

ICT की विशेषताएँ :-

Information and Communication Technology अब बुनियादी जरूरतों में शामिल है और व्यवसायिक संगठन इसे कई अलग-अलग तरीकों से उपयोग करते हैं।

ICT का उपयोग विभिन्न तरीकों से किया जाता है जैसे कि व्यवसायिक संसाधनों को बढ़ावा देना, ग्राहकों को लाना, व्यवसाय में उत्पादकता बढ़ाना आदि।





1. The first part of the report is the introduction. It should state the purpose of the study and the objectives.

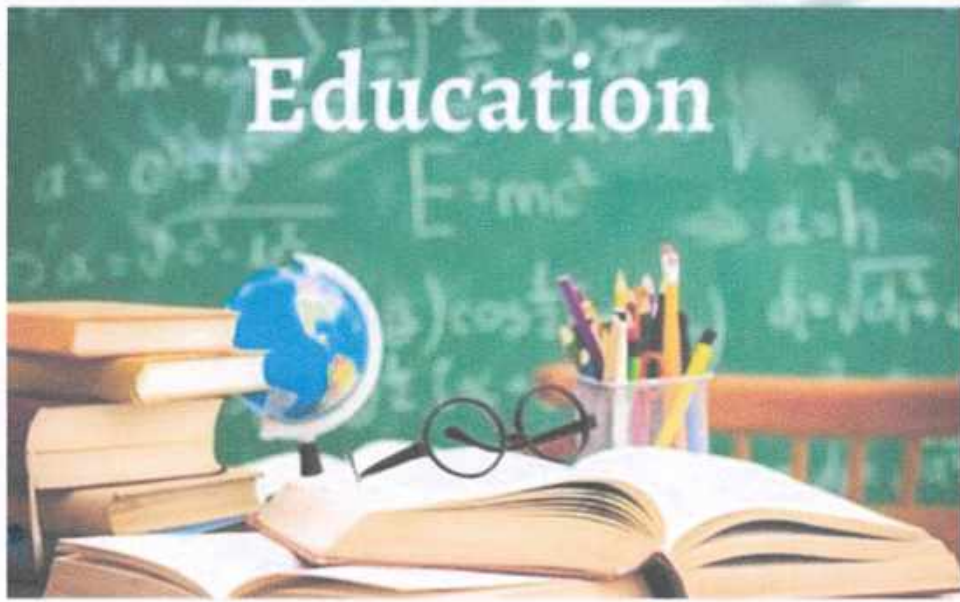


Information and communication technology (ICT) is a key driver of economic growth and development. It has the potential to transform the way we live and work.

The second part of the report is the literature review. It should provide a critical analysis of the existing research on the topic.



Education



Q. (2) शैक्षिक तकनीकी से आप क्या समझते हैं? शिक्षा के क्षेत्र में इसके योगदान का वर्णन करें।

⇒ परिचय :-

‘एजुकेशनल टेक्नीलॉजी’ शब्द जिसका हिन्दी स्वपांतर है ‘शैक्षिक तकनीकी’ यह शब्द दो शब्दों शिक्षा व तकनीकी से मिलकर बना है। शिक्षा देना पढ़ना या प्रशिक्षित करना अतः जब शिक्षक अपने शिक्षण शिक्षण को प्रभावशाली बनाने के लिए विभिन्न तकनीकी साधनों की मदद लेता है जिससे शिक्षण एवं अधिगम दोनों प्रभावित होते हैं। उसे हम शिक्षण तकनीकी कहते हैं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को सहज, सरल, प्रभावशाली बनाने के लिए वैज्ञानिक तकनीकी, मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों, विधियों का उचित प्रयोग शिक्षा तकनीकी कहलाता है जैसे - जैसे नवीनतम के अर्थ परिभाषा तथा स्वरूप में परिवर्तन होता है।

आज विज्ञान के युग में वैज्ञानिक तथा प्रौद्योगिकी आविष्कारों ने मानव जीवन के हर पक्ष को प्रभावित किया है जिससे शिक्षा, शिक्षण तथा अधिगम भी बहुत प्रभावित हुए हैं।

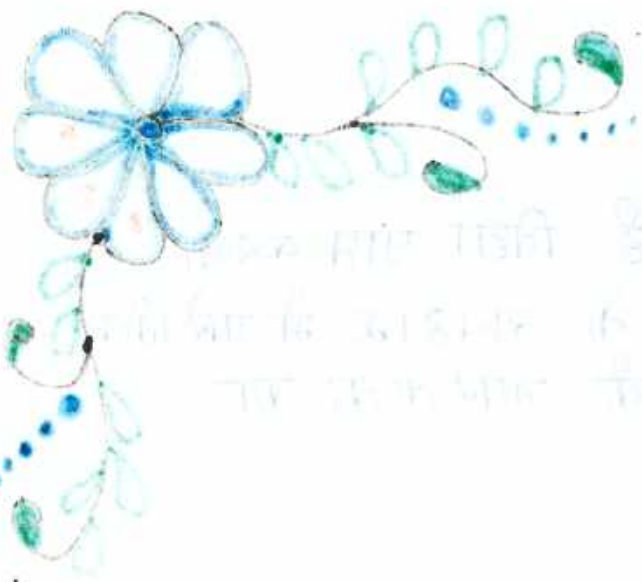
शिक्षा :-

शिक्षा का अर्थ है विद्या प्राप्त करना। शिक्षा से तात्पर्य बालक के व्यवहार में परिवर्तन लाना है। शिक्षा बालक के मस्तिष्क का विकास करती है।

तकनीकी :-

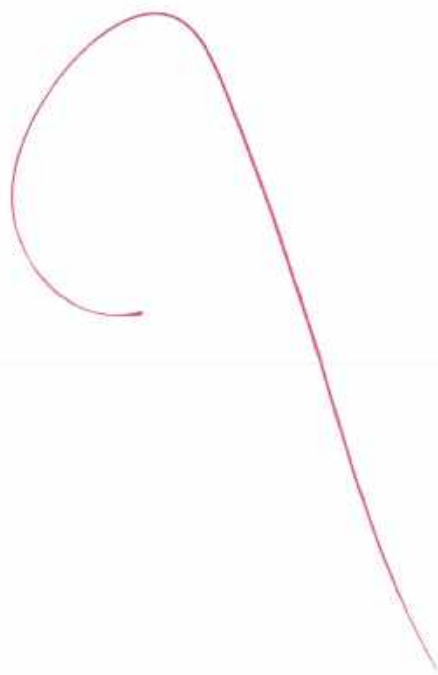
दैनिक जीवन में वैज्ञानिक ज्ञान का प्रयोग करने की विधियाँ ही तकनीकी हैं। अर्थात् हम यह कह सकते हैं कि शिक्षा के क्षेत्र में वैज्ञानिक ज्ञान, सिद्धांत व तकनीकियाँ का प्रयोग करना ही, शैक्षिक तकनीकी कहलाता है। यहाँ यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि अधिकतर लोग तकनीकी शब्द को मशीन संबंधी प्रत्यर्थों से जोड़ते हैं। लेकिन यह आवश्यक नहीं है। इसका तात्पर्य किसी भी प्रयोगात्मक कार्य या सिद्धांत से है।

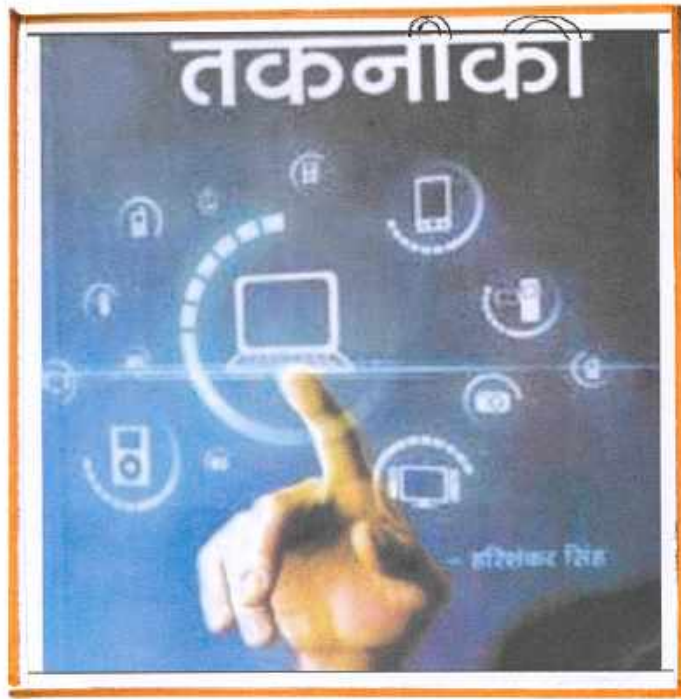




विद्यार्थी को शिक्षा के माध्यम से
संस्कृत के अर्थों को समझाने के लिए शिक्षक को शिक्षा
के माध्यम से संस्कृत शिक्षा देना चाहिए।
। शिक्षा के माध्यम से संस्कृत

विद्यार्थी को शिक्षा के माध्यम से
संस्कृत के अर्थों को समझाने के लिए शिक्षक को शिक्षा
के माध्यम से संस्कृत शिक्षा देना चाहिए।
। शिक्षा के माध्यम से संस्कृत
विद्यार्थी को शिक्षा के माध्यम से
संस्कृत के अर्थों को समझाने के लिए शिक्षक को शिक्षा
के माध्यम से संस्कृत शिक्षा देना चाहिए।
। शिक्षा के माध्यम से संस्कृत
विद्यार्थी को शिक्षा के माध्यम से
संस्कृत के अर्थों को समझाने के लिए शिक्षक को शिक्षा
के माध्यम से संस्कृत शिक्षा देना चाहिए।
। शिक्षा के माध्यम से संस्कृत





परिभाषा :-

शैक्षिक तकनीकी सीखने व सिखाने की दशाओं में वैज्ञानिक ज्ञान का प्रयोग होता है, जिसके द्वारा शिक्षण एवं प्रशिक्षण की प्रक्रिया की प्रभावपूर्णता एवं दक्षता का विकास कर उसमें सुधार लाया जाता है।

डा० एस० एस कुलकर्णी के अनुसार :-

“शैक्षिक तकनीकी उन सभी प्रणालियों, विधियों एवं माध्यमों का विज्ञान है। जिसके द्वारा शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति की जा सकती है।”

जे० पी० डिसिको के अनुसार :-

“शैक्षिक तकनीकी व्यवहारिक शिक्षण की समस्याओं में अधिगम मनीविज्ञान के विस्तृत प्रयोग का एक रूप है।”

बी० एफ० स्किनर के अनुसार :-

“शैक्षिक तकनीकी वह शास्त्र है जो शिक्षा की प्रभावशीलता में वृद्धि करता है तथा सम्पूर्ण शिक्षण प्रक्रिया के अपेक्षाकृत अधिक समुन्नत करता है।”

आई. के. डेविस के अनुसार :-

शैक्षिक तकनीकी का संबंध शैक्षिक और शिक्षण के संदर्भ में समस्याओं से होता है और उसमें अधिगम के सीतों के संगठन में अनुशासित और प्रणाली उपागम के पर्याग की ह्मता विशेष होती है ।

शैक्षिक तकनीकी की विशेषताएँ :-

- (1) शैक्षिक तकनीकी शिक्षण समस्याओं को समझ कर नई तकनीकी विकसित करती है और उस समस्याओं के समाधान में काफी मदद करती है ।
- (2) शैक्षिक तकनीकी शिक्षा विज्ञान तथा शिक्षण कला दोनों को प्रभावित करती है ।
- (3) शैक्षिक तकनीकी शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को सरल तथा सशक्त बनाती है ।
- (4) समय के साथ जिस तरह विज्ञान का विकास होता है वैसे वैसे ही शैक्षिक तकनीकी का विकास होता है ।
- (5) यह नियंत्रण विकास करती है विज्ञान के विभिन्न नियम तथा अविष्कार ही शैक्षिक तकनीकी के आधार बनाते हैं ।



विद्यार्थी जीवन

विद्यार्थी जीवन के दौरान हमें अनेक चुनौतियाँ मिलती हैं। हमें अपने अंदर की क्षमताओं को पहचानना और उन्हें विकसित करना पड़ता है। हमें अपने लक्ष्यों को तय करना और उनमें सफलता प्राप्त करने के लिए मेहनत करना पड़ता है। हमें अपने दोस्तों और परिवार के साथ अच्छे संबंध बनाए रखने की आवश्यकता है। हमें अपने स्वास्थ्य को भी ध्यान में रखना चाहिए।

विद्यार्थी जीवन के दौरान हमें निम्नलिखित बातें ध्यान में रखनी चाहिए (1)

1. अपने लक्ष्यों को तय करना और उनमें सफलता प्राप्त करने के लिए मेहनत करना।

2. अपने दोस्तों और परिवार के साथ अच्छे संबंध बनाए रखना।

3. अपने स्वास्थ्य को ध्यान में रखना।

4. अपने शिक्षकों के सुझावों को ध्यान में रखना।

5. अपने समय को ठीक से बताना।

6. अपने अंदर की क्षमताओं को पहचानना और विकसित करना।

7. अपने लक्ष्यों को तय करना और उनमें सफलता प्राप्त करने के लिए मेहनत करना।

8. अपने दोस्तों और परिवार के साथ अच्छे संबंध बनाए रखना।

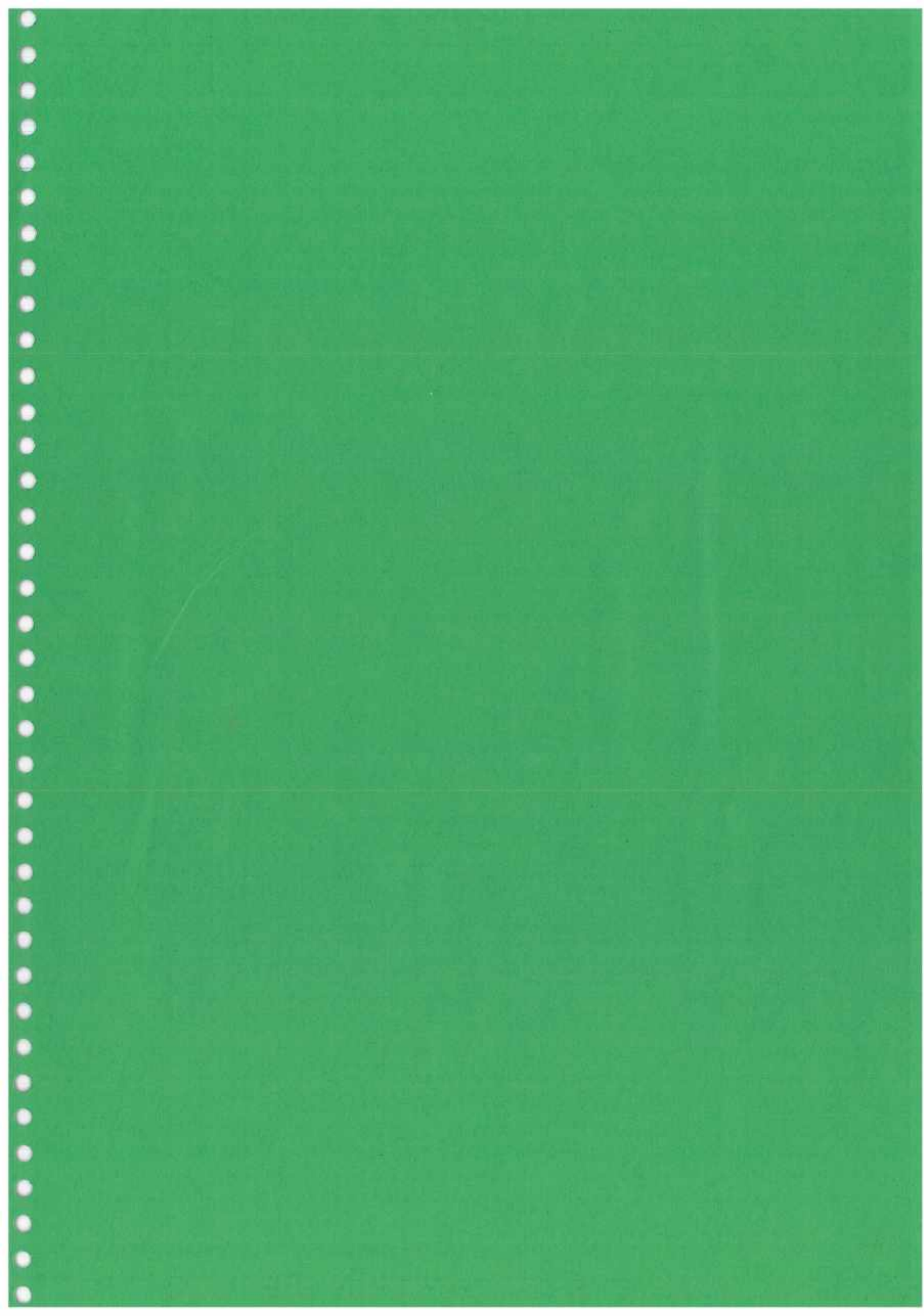
9. अपने स्वास्थ्य को ध्यान में रखना।

10. अपने शिक्षकों के सुझावों को ध्यान में रखना।

11. अपने समय को ठीक से बताना।

12. अपने अंदर की क्षमताओं को पहचानना और विकसित करना।







शैक्षिक तकनीकी की आवश्यकता :-

- (1) शिक्षण प्रक्रिया को सरल बनाने हेतु ।
- (2) शिक्षण को सचिकर बनाने हेतु ।
- (3) शिक्षण को प्रभावी बनाना ।
- (4) शिक्षण को स्थायी बनाना ।
- (5) ज्ञान का संचय व प्रचार करना ।
- (6) समय व ऊर्जा की बचत करना ।

शैक्षिक तकनीकी की प्रकृति :-

- (1) शैक्षिक तकनीकी शिक्षा को दूर-दराज के इलाकों में फैलाने में सहायता देती है ।
- (2) यह शैक्षिक उद्देश्यों की पूर्ति हेतु अधिगम की परिस्थितियों में आवश्यकता अनुसार परिवर्तन लाने में सहायक है ।
- (3) शैक्षिक तकनीकी स्वयं से सीखने की बढ़ावा देती है ।
- (4) शैक्षिक तकनीकी के विकास के फलस्वरूप शिक्षण में नवीन शिक्षण विधियाँ तथा नवीन शिक्षण तकनीकी का विकास हुआ है ।
- (5) शैक्षिक तकनीकी शिक्षा पर विज्ञान तथा तकनीकी के प्रभाव को प्रदर्शित करती है ।

- (6) शैक्षिक तकनीकी व्यवहारिक पक्ष को महत्व दिया जाता है ।
- (7) यह निरंतर विकासशील विषय है ।
- (8) विज्ञान ही इसकी आधारशीला है ।
- (9) सीखने की प्रक्रिया में विकास करती है ।
- (10) शैक्षिक तकनीकी शिक्षा पर विज्ञान तथा तकनीकी के प्रभाव का अध्ययन करती है ।

उद्देश्य :-

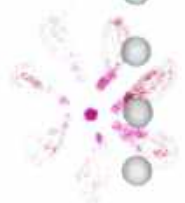
शैक्षिक तकनीकी का मुख्य उद्देश्य शिक्षण अधिगम को प्रभावी बनाना है । इस कार्य के लिए वैज्ञानिक सिद्धांतों एवं उपकरणों का सम्मिलित प्रयोग किया जाता है । मूल रूप से शैक्षिक तकनीकी उद्देश्यों के निर्धारण से लेकर मूल्यांकन तक के सारे चरणों पर पूरी - भ्रान्ति ध्यान केंद्रित करती है अधिगम को प्रभावी बनाने के लिए वह निम्न-लिखित कार्य करती है :-

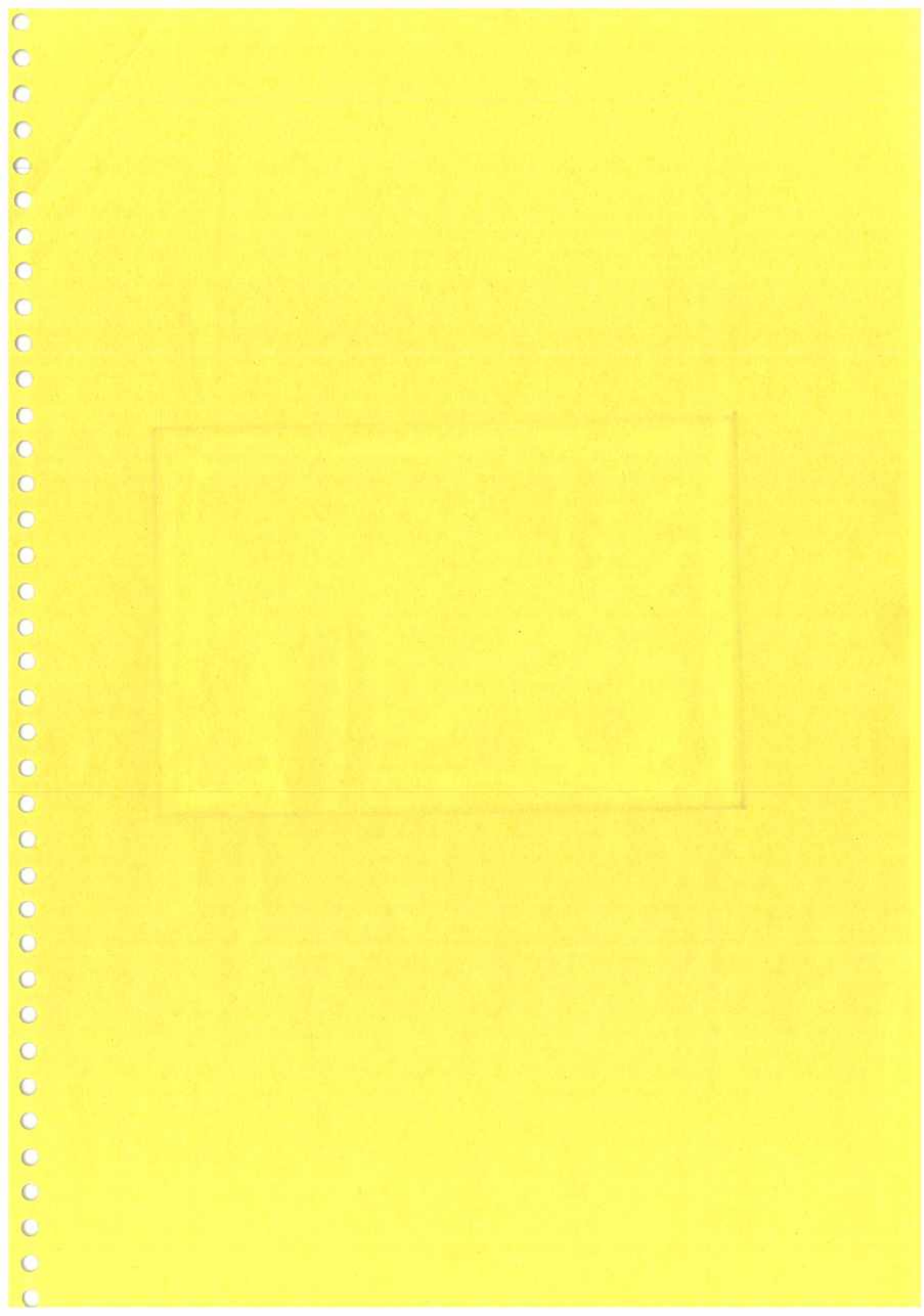
- 1) शैक्षिक उद्देश्यों का निर्धारण ।
- 2) प्रस्तुतीकरण प्रभावी बनाने हेतु शिक्षण युक्तियों / विधियों का निर्धारण ।
- 3) पाठ का समुचित विकास ।
- 4) मूल्यांकन ।

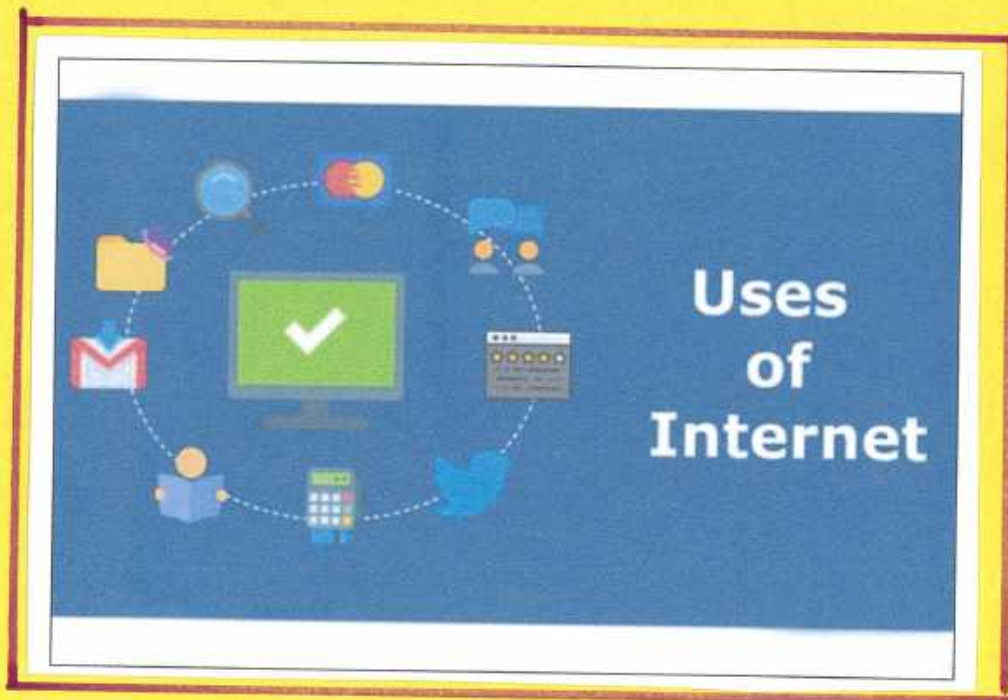


1. संस्कृत भाषा का विकास (2)
 2. संस्कृत भाषा का विकास (2)
 3. संस्कृत भाषा का विकास (2)
 4. संस्कृत भाषा का विकास (2)
 5. संस्कृत भाषा का विकास (2)
 6. संस्कृत भाषा का विकास (2)
 7. संस्कृत भाषा का विकास (2)
 8. संस्कृत भाषा का विकास (2)

1. संस्कृत भाषा का विकास (2)
 2. संस्कृत भाषा का विकास (2)
 3. संस्कृत भाषा का विकास (2)
 4. संस्कृत भाषा का विकास (2)
 5. संस्कृत भाषा का विकास (2)
 6. संस्कृत भाषा का विकास (2)
 7. संस्कृत भाषा का विकास (2)
 8. संस्कृत भाषा का विकास (2)







Q. 3) इंटरनेट और संचार उपग्रह की
व्याख्या करे ।

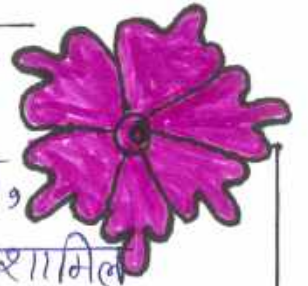
⇒ इंटरनेट :-

इंटरनेट कंप्यूटरों का एक विश्वव्यापी नेटवर्क है । इंटरनेट में बहुत से स्थानीय, क्षेत्रीय, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय नेटवर्क होते हैं यह कंप्यूटरों का ऐसा अंतर्राष्ट्रीय नेटवर्क है । इस तथ्य से इनकार नहीं किया जा सकता है कि इंटरनेट ने हमारे जीवन जीने के तरीके में एक क्रांति पैदा कर दी है । इसने संचार, व्यवसाय और सूचना प्राप्त करने के साथ-साथ हमारे मनोरंजन के तरीकों को भी बदलकर रख दिया है ।

इंटरनेट की परिभाषा :-

इंटरनेट एक विश्व स्तर पर जुड़ा नेटवर्क सिस्टम है जो प्रोटोकॉल के उपयोग से एक कंप्यूटर से दूसरे कंप्यूटर के बीच विभिन्न प्रकार के मीडिया के माध्यम से सूचनाएँ, जानकारियाँ या डाटा का संचार या आदान-प्रदान के लिए उपयोग किया जाता है । इस नेटवर्क में कंप्यूटर सर्वर भी शामिल होते हैं । अगर हम साधारण भाषा में कहें तो इंटरनेट दुनिया भर में आपस में राउटर और स्विच के माध्यम से जुड़े कंप्यूटरों का

तंत्र या जाल हैं। इस वैश्विक तंत्र या नेटवर्क में नीजी, सार्वजनिक, अवसायिक, शैक्षणिक और सरकारी नेटवर्क इत्यादि शामिल हैं।



आज पूरी दुनिया इंटरनेट की गिरफ्त में है, इंटरनेट के बिना आज जिंदगी की कल्पना ही नहीं की जा सकती है। हर कोई आज इंटरनेट का आदि बन चुका है, क्योंकि जिस चीज की कल्पना भी नहीं की जा सकती थी, उसे आज इंटरनेट ने हकीकत में बदल दिया है।

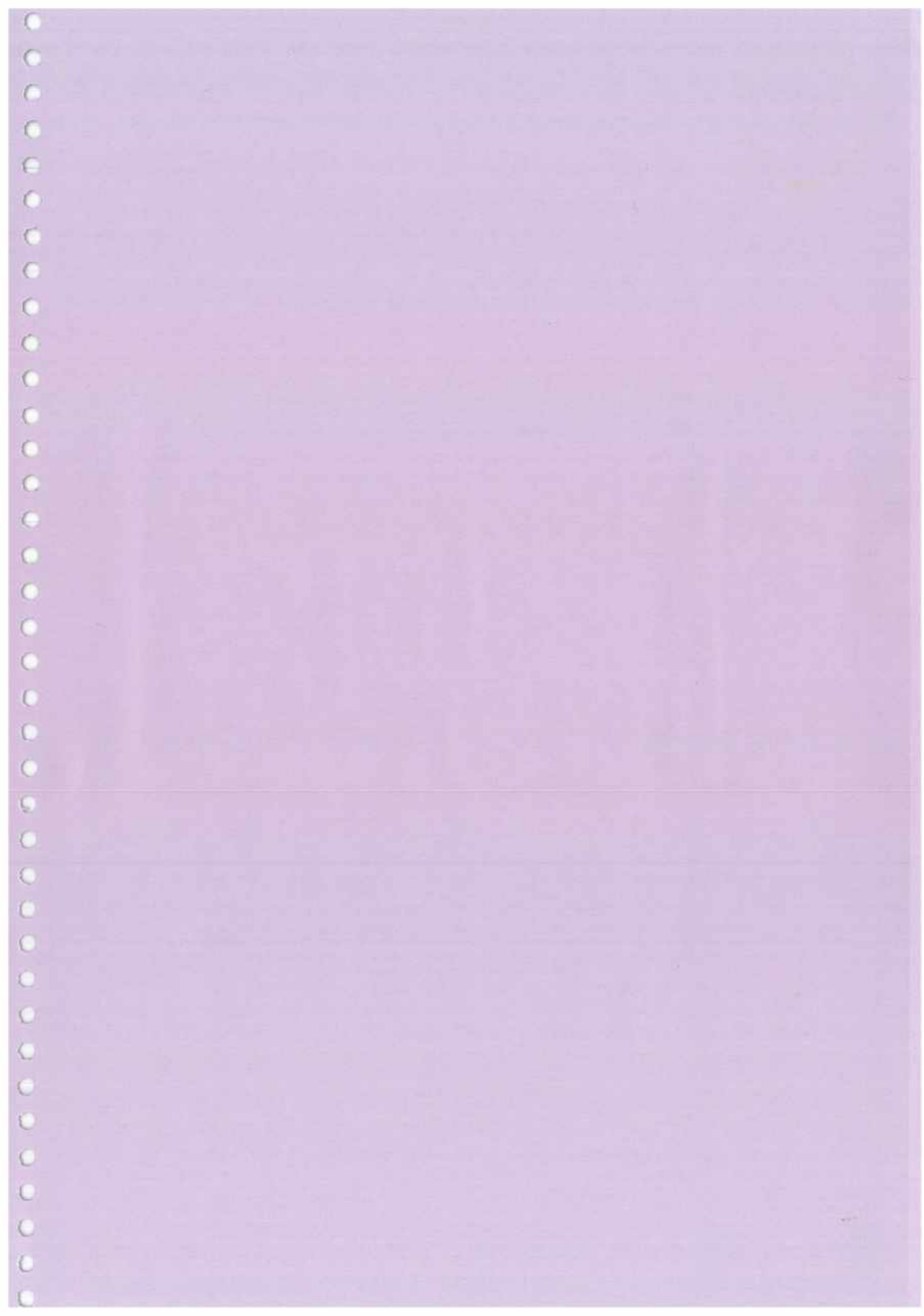
इंटरनेट के माध्यम से आज घर बैठ-बैठ दुनिया के किसी भी कोने में बैठे शख्स से बातचीत कर सकते हैं, ईमेल या सोशल नेटवर्किंग साइट्स के माध्यम से अपना संदेश भेज सकते हैं, वीडियो कॉल कर सकते हैं। वहीं इंटरनेट ने कम्युनिकेशन को इतना आसान बना दिया है कि देश-दुनिया की अर्थव्यवस्था पहले के मुकाबले काफी बेहतर हो गई है।



... ..

-
-
-
-

... ..





इंटरनेट की उपयोग :-

इंटरनेट के उपयोग की कोई निश्चित सीमा नहीं है। प्रतिदिन इसके नए-नए उपयोग हमारे सामने आ रहे हैं। इंटरनेट के माध्यम से सूचनाएँ, समाचार और अनुसंधान सामग्री प्राप्त और प्रेषित की जा सकती है। इस पर बैंकिंग, निवेश संबंधी कार्य, वस्तुओं की खरीदारी तथा विभिन्न कंपनियों और प्रोफेशनल व्यक्तियों की सेवाएँ प्राप्त कर सकते हैं। ऑनलाइन एप्लिकेशन के द्वारा इस पर शैक्षिक गतिविधियाँ भी खूब चल रही हैं। मनोरंजन जैसे - ऑनलाइन खेल, पत्रिकाएँ पढ़ने, फिल्में देखने और संगीत सुनने के लिए भी इंटरनेट के माध्यम से आप फोटोग्राफ, ह्वनि तथा चलचित्रों का संप्रेषण भी कर सकते हैं। इन सभी गतिविधियों को चलाने के लिए इंटरनेट अपने उपयोगकर्ताओं को अनेक सेवाएँ प्रदान करता है।



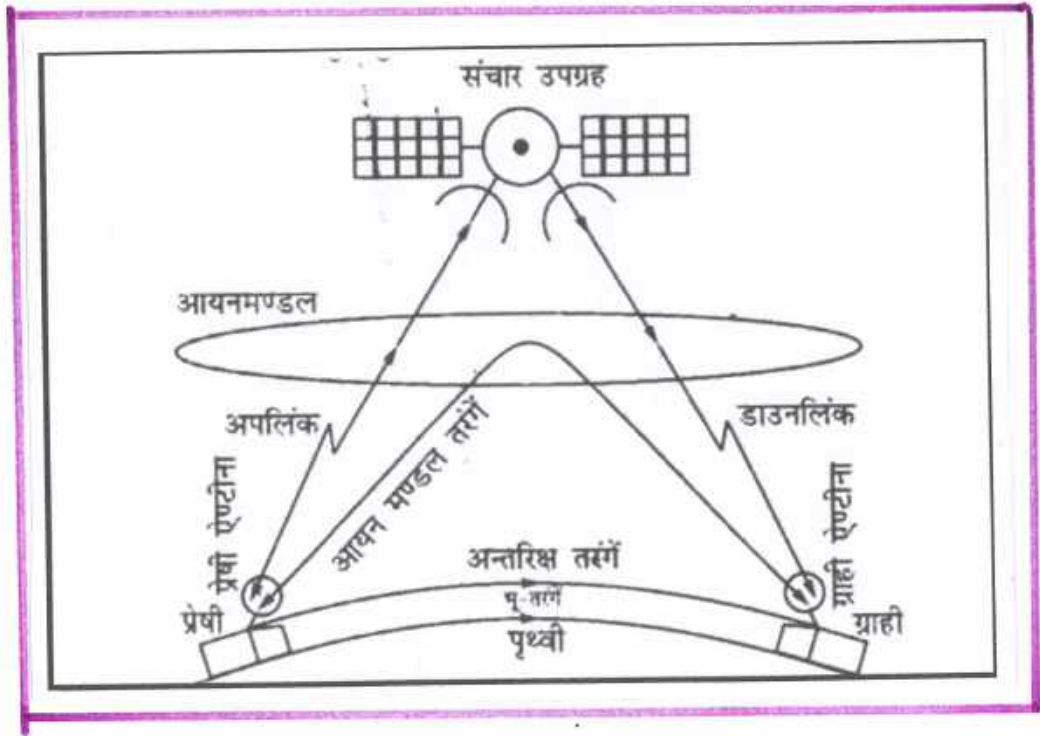


1957-58 का वर्ष

1. गणराज्य में प्रथम बार जनसंख्या 100 करोड़ के आंकड़े का उद्घाटन हुआ।
 2. भारत सरकार ने राष्ट्रीय विकास परिषद की स्थापना की।
 3. भारत सरकार ने राष्ट्रीय योजना आयोग की स्थापना की।
 4. भारत सरकार ने राष्ट्रीय विकास परिषद की स्थापना की।
 5. भारत सरकार ने राष्ट्रीय विकास परिषद की स्थापना की।
 6. भारत सरकार ने राष्ट्रीय विकास परिषद की स्थापना की।
 7. भारत सरकार ने राष्ट्रीय विकास परिषद की स्थापना की।
 8. भारत सरकार ने राष्ट्रीय विकास परिषद की स्थापना की।
 9. भारत सरकार ने राष्ट्रीय विकास परिषद की स्थापना की।
 10. भारत सरकार ने राष्ट्रीय विकास परिषद की स्थापना की।







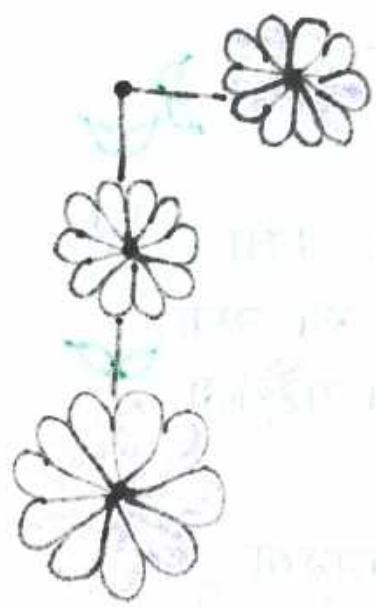
संचार उपग्रह :-

पृथ्वी के चारों तरफ कक्षा में स्थित किसी उपग्रह की सहायता से एक जगह से दूसरी जगह तक सूचना को पहुँचाना उपग्रह संचार कहलाता है ।

इसी संचार के कारण हम दुनिया के किसी भी कोने में ही रहे मैच का लाइव टेलीकास्ट देख सकते हैं ।

इस उपग्रह संचार व्यवस्था में एक सूक्ष्म मांडुलित तरंगों की उपग्रह की तरफ भेजा जाता है और यह उपग्रह इन तरंगों की ग्राही की तरफ भेज देता है और ये तरंग ग्राही के पास पहुँच जाती हैं ।

जिस उपग्रह के द्वारा संचार संपन्न करवाया जाता है । यह पृथ्वी के सापेक्ष स्थिर रहता है क्योंकि इस उपग्रह का परिभ्रमण काल भी 24 घंटे ही रहता है जो पृथ्वी के परिभ्रमण काल के बराबर होता है अर्थात् यह उपग्रह पृथ्वी के साथ-साथ घूमता रहता है । या परिभ्रमण करता रहता है । उपग्रह को पृथ्वी के सतह से लगभग 36000 किलोमीटर ऊपर रखा जाता है जो आयनमंडल के सभी ऊपर होता है । संचार उपग्रह को रेडियो ट्रांसपींडर भी कहते हैं । यह संचार उपग्रह पृथ्वी से आने वाले सूचना तरंगों को प्रवर्धित करता है ।



मनुष्य का जीवन चक्र

मनुष्य का जीवन चक्र एक निरंतर प्रक्रिया है जो जन्म से शुरू होता है और मृत्यु तक चलता है। इसमें प्रजनन, वृद्धि, परिपक्वता, वृद्धावस्था और अंत शामिल हैं।

जन्म के बाद, शिशु का जीवन प्रारंभिक चरणों से गुजरता है, जिसमें शारीरिक और मानसिक विकास शामिल है।

यह चरण प्रारंभिक बचपन, मध्यम बचपन और बड़े बचपन में विभाजित है। प्रारंभिक बचपन में, बच्चे शारीरिक और मानसिक विकास के लिए आवश्यक बुनियादी कौशल सीखते हैं।

मध्यम बचपन में, बच्चे अपने शैक्षणिक और सामाजिक जीवन में प्रवेश करते हैं। बड़े बचपन में, वे अपने करियर और व्यक्तिगत जीवन में प्रवेश करते हैं।

वृद्धावस्था में, मनुष्य शारीरिक और मानसिक क्षमताओं में गिरावट का सामना करते हैं। यह चरण अक्सर स्वास्थ्य संबंधी चुनौतियों और सामाजिक अलगाव से जुड़ा होता है।

अंत में, मनुष्य मृत्यु का सामना करते हैं। यह जीवन चक्र का अंतिम चरण है, जो अक्सर आध्यात्मिक और सांस्कृतिक विश्वासों से जुड़ा होता है।

मनुष्य का जीवन चक्र एक जटिल प्रक्रिया है, जो अनेक कारकों पर निर्भर करता है। यह व्यक्तिगत विशेषताओं, सामाजिक और आर्थिक स्थितियों, और पर्यावरणीय प्रभावों से प्रभावित होता है।

इस प्रकार, मनुष्य का जीवन चक्र एक निरंतर प्रक्रिया है, जो जन्म से शुरू होता है और मृत्यु तक चलता है।



और पुनः इन सिग्नलों की ग्राही की तरफ भेज देता है।

इस संचार व्यवस्था में दो लिंक होते हैं -

उपलिंक :-

जब उपग्रह प्रेषि द्वारा भेजे गए सिग्नल को ग्रहण करता है या प्राप्त करता है तो ये सिग्नल उपग्रह उप लिंक द्वारा प्राप्त करता है।

डाउनलिंक :-

प्रेषि द्वारा प्राप्त सिग्नलों को उपग्रह प्रवर्धित करता है और डाउन लिंक के द्वारा इन्हें ग्राही को भेज देता है। एक उपग्रह के द्वारा सम्पूर्ण भू-मंडल पर भेजना संभव नहीं है। सम्पूर्ण भू-मंडल पर किसी संकेत को भेजने के लिए कम से कम तीन उपग्रहों की आवश्यकता होती है।

उपग्रह संचार अंतरिक्ष तरंग संचरण विधि द्वारा पृथ्वी के सम्पूर्ण क्षेत्र को आवरित नहीं किया जा सकता, क्योंकि विषम भौगोलिक परिस्थितियों के कारण निरंतर पुनरावर्तक लगाना संभव नहीं है। अतः इसके लिए आवश्यक है कि संचार उच्च आवृत्ति पर हो। 30 MHz से अधिक आवृत्ति की तरंगी परम्परागत विधियाँ द्वारा संचारित



1. एक संख्या को भागफल में बदलने के लिए हमें उसे 10 के घात में लिखना पड़ेगा।

उदाहरण के लिए $10^2 = 100$ और $10^3 = 1000$ ।

यदि हम 10^2 को 10^3 से गुणा करेंगे तो हमें 10^5 मिलेगा।
इसी तरह $10^2 \times 10^3 = 10^{2+3} = 10^5$ ।

यदि हम 10^3 को 10^2 से गुणा करेंगे तो हमें 10^5 मिलेगा।
इसी तरह $10^3 \times 10^2 = 10^{3+2} = 10^5$ ।



यदि हम 10^2 को 10^2 से गुणा करेंगे तो हमें 10^4 मिलेगा।
इसी तरह $10^2 \times 10^2 = 10^{2+2} = 10^4$ ।

नहीं करे जा सकती है। इसके लिए संचार उपग्रहों का प्रयोग किया जाता है।

संचार उपग्रह एक ऐसा उपग्रह है जो पृथ्वी के चारों ओर पश्चिम से पूर्व की ओर वृताकार कक्षा में इस प्रकार परिक्रमण करता है कि इसका आवर्त काल पृथ्वी के अपनी अक्ष के परितः घूर्णन काल के बराबर अर्थात् 24 घंटे ही। इसलिए यह उपग्रह पृथ्वी के सापेक्ष सदैव स्थिर प्रतीत होता है। इस प्रकार लम्बी दूरी से संचरण के लिए इन संचार उपग्रहों का प्रयोग किया जाता है। इनको स्थिर उपग्रह अथवा ग्लोबल उपग्रह भी कहते हैं।

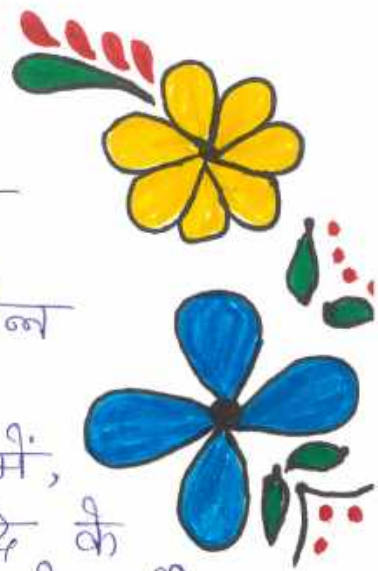
इस प्रकार के संचार उपग्रहों में माइक्रो तरंग सिग्नल के अभिगृहण तथा प्रेषण के लिए आवश्यक उपकरण लगे रहते हैं। पृथ्वी के प्रेषित स्टेशन से एक आवृत्ति के माइक्रो तरंग सिग्नल उपग्रह की ओर प्रेषित किये जाते हैं।

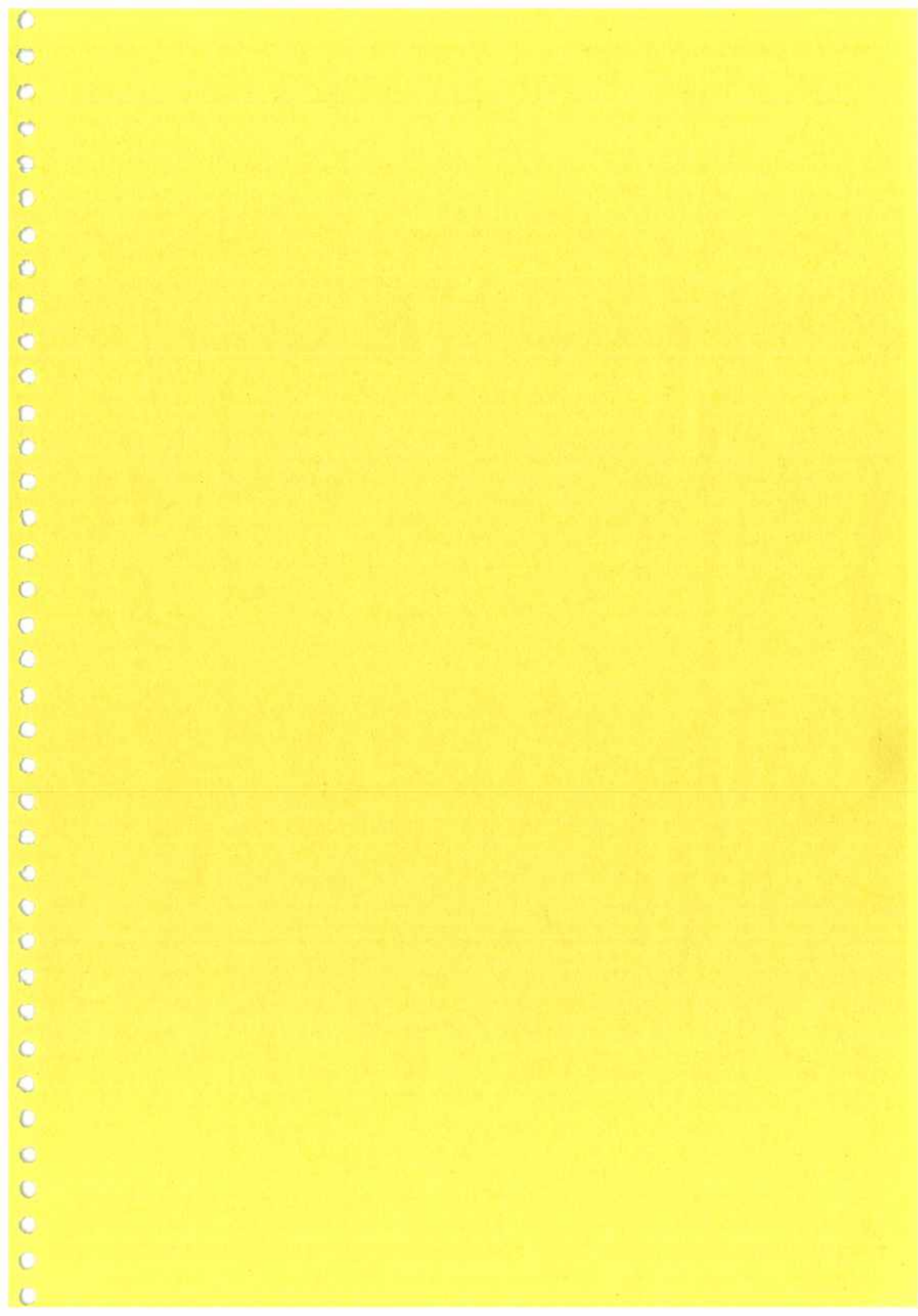
संचार उपग्रह के अनुप्रयोग :-

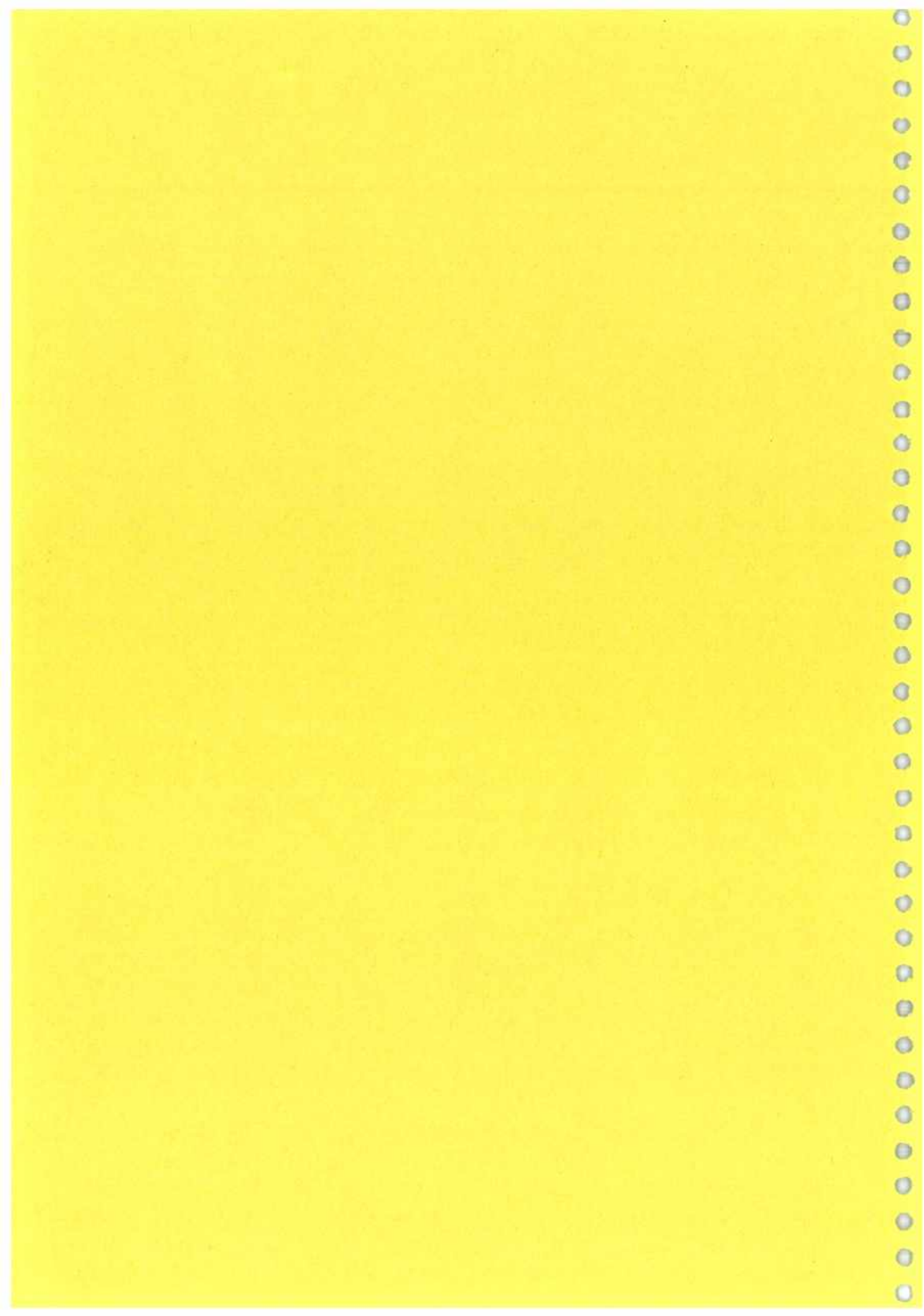
संचार उपग्रह का उपयोग हम विभिन्न चीजों में करते हैं, अतः इसके अनुप्रयोग कई हैं जैसे :- टेलीफोन में, टेलीविजन में, रेडियो, इंटरनेट आदि के लिए उपग्रह संचार का ही उपयोग होता है।

इस वक्त हमारे सर के उपर 2000 से भी अधिक मानव निर्मित उपग्रह घूम रहे हैं जो विभिन्न प्रकार के कार्यों के लिए पृथ्वी की कक्षाओं में छोड़े गए हैं। ताकि विभिन्न प्रकार का संचार अधिक अच्छा बनाया जा सके। यह लम्बी दूरियाँ, दूरस्थ पर्वतीय क्षेत्रों के लिए संचार की आसान तथा अप्रत्याशी माध्यम हैं।

वर्तमान समय में उपग्रह संचार के अनुप्रयोग बढ़ते जा रहे हैं। हम जी०पी०एस का इस्तेमाल करते हैं। यह भी उपग्रह संचार द्वारा संभव है। तथा हम मौसम आदि की जानकारी प्राप्त करते हैं। संचार उपग्रह टेलीविजन, टेलीफोन, मोबाइल फोन सेवाओं के लिए उपयुक्त संचार माध्यम हैं।







निष्कर्ष

आज के समय में सभी लोग किसी न किसी टेक्नोलॉजी पर निर्भर हैं जैसे कि अगर हमारा इंटरनेट बंद हो जाए तो एक दिन निकालना भी बहुत मुश्किल हो जाता है। जैसे में यह एक बहुत बड़ी भूमिका निभा रहे हैं। और साथ ही इसके माध्यम से व्यापार करने में बहुत आसानी हो चुकी है।

इसका इस्तेमाल शिक्षा के क्षेत्र में भी बहुत अधिक होता है आज कई सारे विद्यार्थी किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए इंटरनेट का इस्तेमाल करते हैं।

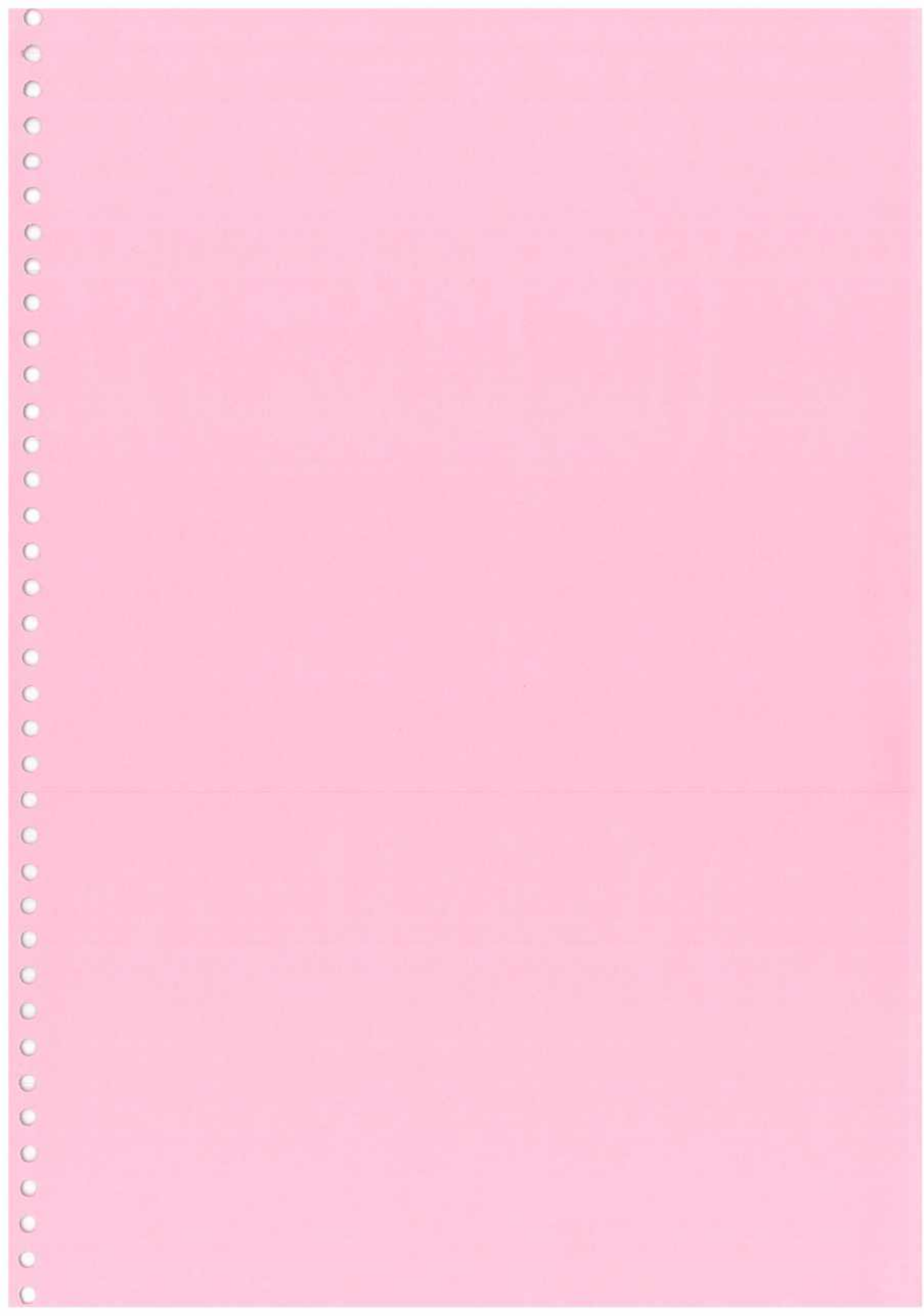
आधुनिक सूचना और संचार प्रौद्योगिकी ने एक "Global Village" बनाया है, जिसमें लोग दुनिया भर में दूसरों के साथ संवाद कर सकते हैं।

विश्वीय गैर-सरकारी संगठनों के संस्थापक हैं जिनके
सदस्य हैं। उन्हें इंटरनेट का प्रयोग करने
में मदद करने के लिए वे रोज़ रोज़ इंटरनेट पर
उन्हें जोड़ते हैं। यह एक निर्यात प्रणाली है
जो कि इंटरनेट पर बहुत सारे डाटा को जोड़ने
में मदद करती है। यह एक प्रणाली है जो कि
इंटरनेट पर बहुत सारे डाटा को जोड़ने में
मदद करती है।

यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण प्रणाली है जो कि
इंटरनेट पर बहुत सारे डाटा को जोड़ने में
मदद करती है। यह एक प्रणाली है जो कि
इंटरनेट पर बहुत सारे डाटा को जोड़ने में
मदद करती है।

यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण प्रणाली है जो कि

इंटरनेट पर बहुत सारे डाटा को जोड़ने में
मदद करती है। यह एक प्रणाली है जो कि
इंटरनेट पर बहुत सारे डाटा को जोड़ने में
मदद करती है।





**BHARATHI COLLEGE OF EDUCATION
KANDRI RANCHI**

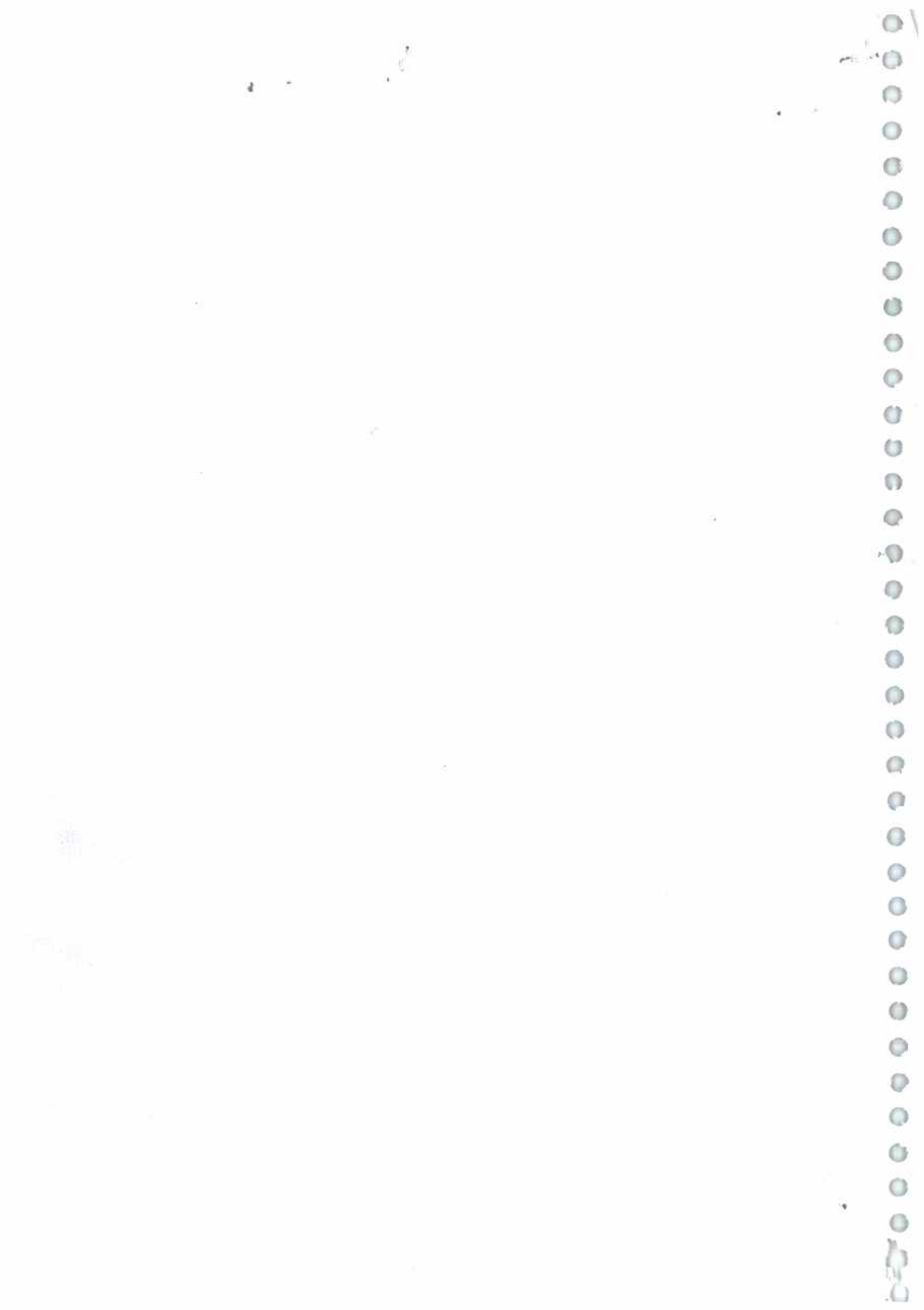


CYBER CRIME

Guided by:-
Asst. Pro .
Vivek Raj Jaiswal

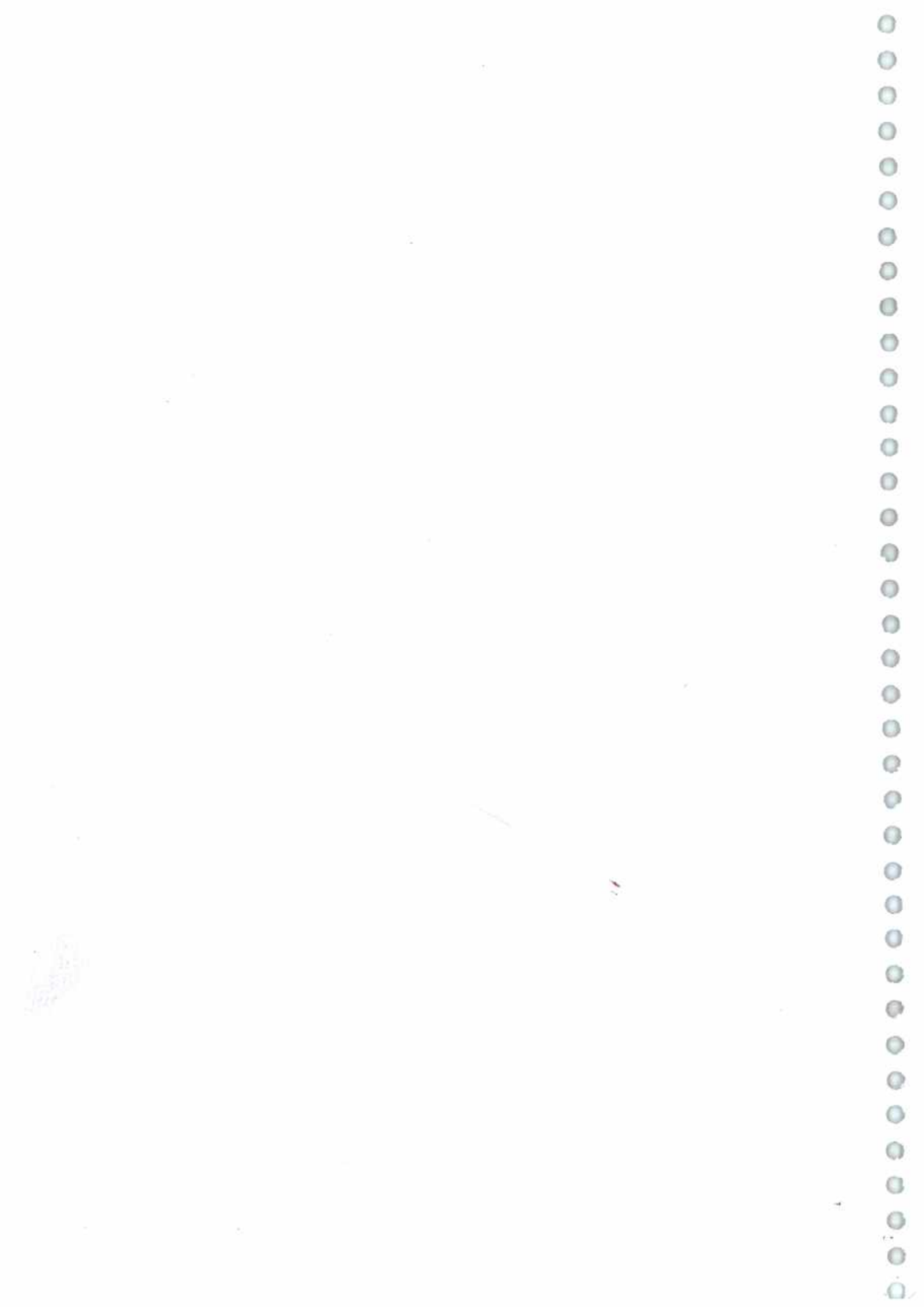


Submitted-
Name - Archana Kerketta
Roll No - 22
Session - 2020-22



साइबर अपराध

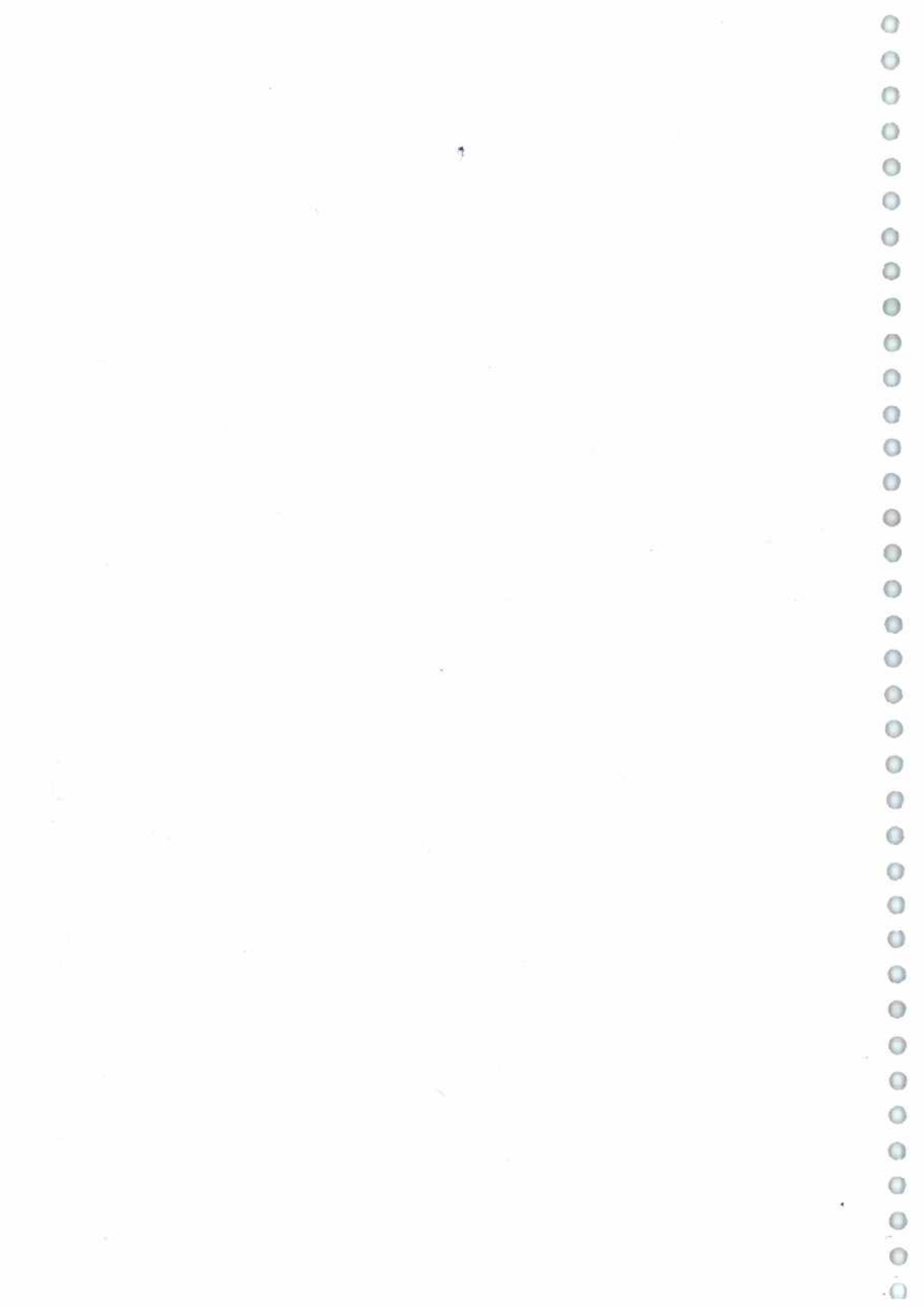
- ▶ साइबर अपराध, जिसे कंप्यूटर अपराध भी कहा जाता है, एक उपकरण के रूप में कंप्यूटर का उपयोग अवैध उद्देश्यों के लिए किया जाता है, जैसे कि धोखाधड़ी करना, चाइल्ड पोर्नोग्राफी और बौद्धिक संपदा की तस्करी, पहचान की चोरी करना, या गोपनीयता का उल्लंघन करना।



साइबर अपराध के प्रकार

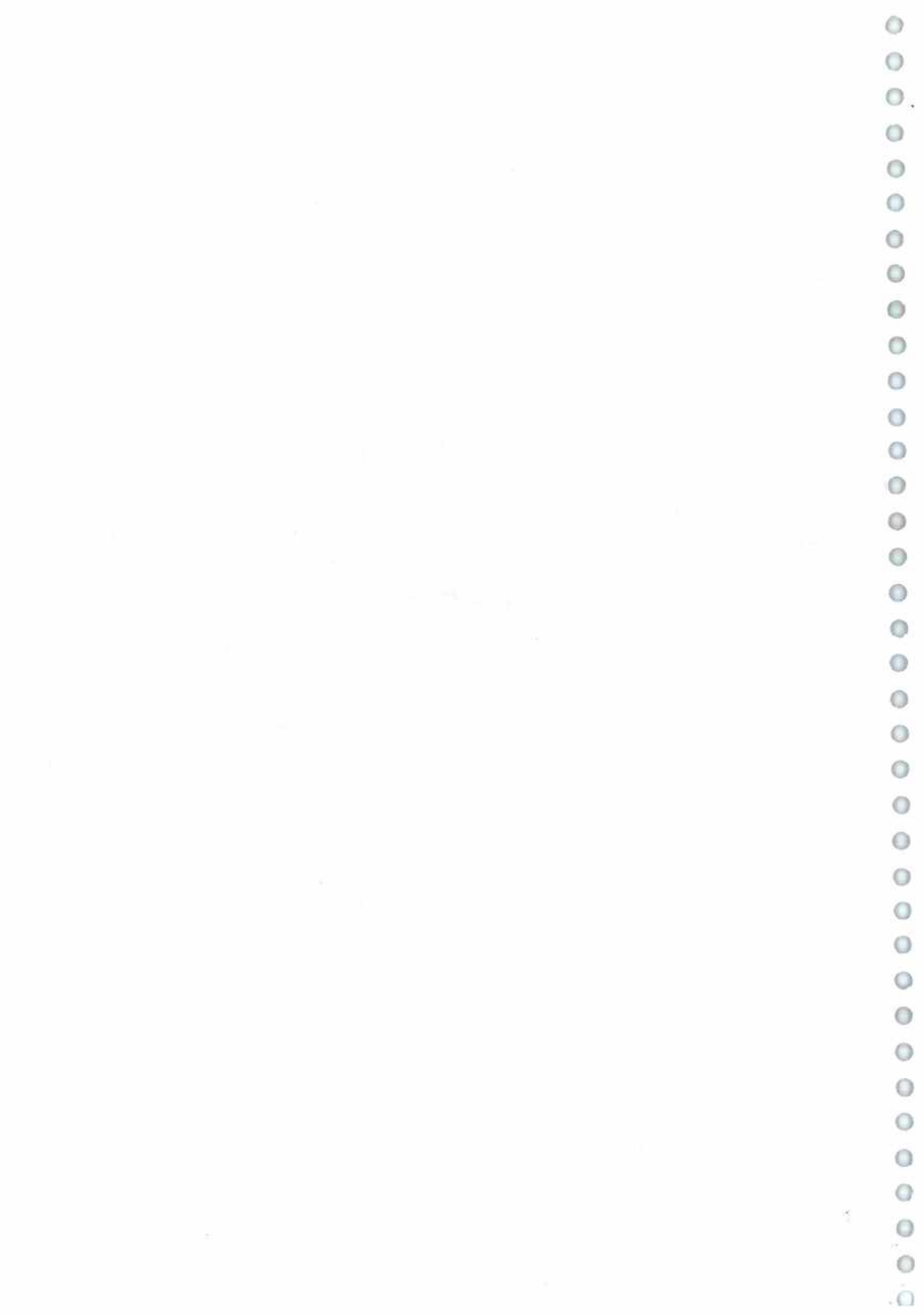
- ▶ स्पैम ईमेल- अनेक प्रकार के ईमेल आते है जिसमें एसे ईमेल भी होते है जो सिर्फ कंप्यूटर को नुकसान पहुंचाते है। उन ईमेल से सारे कंप्यूटर में खराबी आ जाती है।
- ▶ हैकिंग- किसी की भी निजी जानकारी को हैक करना जैसे की उपयोगकर्ता नाम या पासवर्ड और फिर उसमे फेर बदल करना।
- ▶ साइबरफिशिंग- किसी के पास स्पैम ईमेल भेजना ताकी वो अपनी निजी जानकारी दे और उस जानकारी से उसका नुकसान हो सके। यह इमेल आकर्षित होते

है।



साइबर क्राइम की रोकथाम

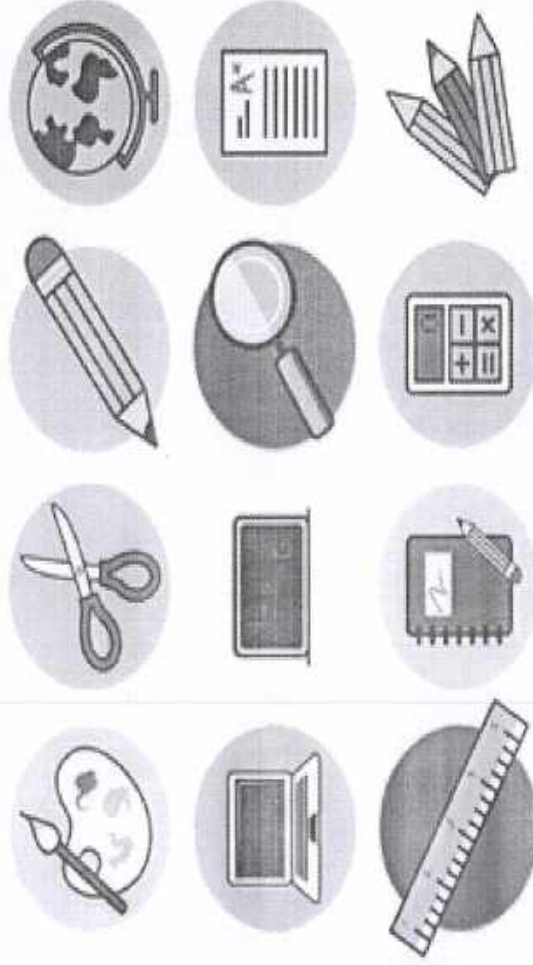
- ▶ अपनी व्यक्तिगत जानकारी को कभी भी वेबसाइटों पर सार्वजनिक रूप से प्रकट न करें। सार्वजनिक स्थान पर अजनबियों के लिए अपनी पहचान का खुलासा करने के रूप में यह उतना ही अच्छा है।
- ▶ हमेशा किसी भी तस्वीर को ऑनलाइन भेजने से बचें विशेष रूप से अजनबियों और दोस्तों से चैट करें क्योंकि तस्वीरों के दुरुपयोग की घटनाएं हुई हैं।
- ▶ किसी भी साइट पर अपना क्रेडिट कार्ड नंबर दर्ज न करें जो सुरक्षित नहीं है, इसके दुरुपयोग को रोकने के लिए।
- ▶ व्यवसाय और कर्मचारियों के लिए स्पष्ट नीतियों और प्रक्रियाओं को विकसित करना



BHARATHI COLLEGE OF EDUCATION

KANDRI RANCHI

Teaching Learning Materials



Guided by:-

Asst. Pro .

Vivek Raj Jaiswal

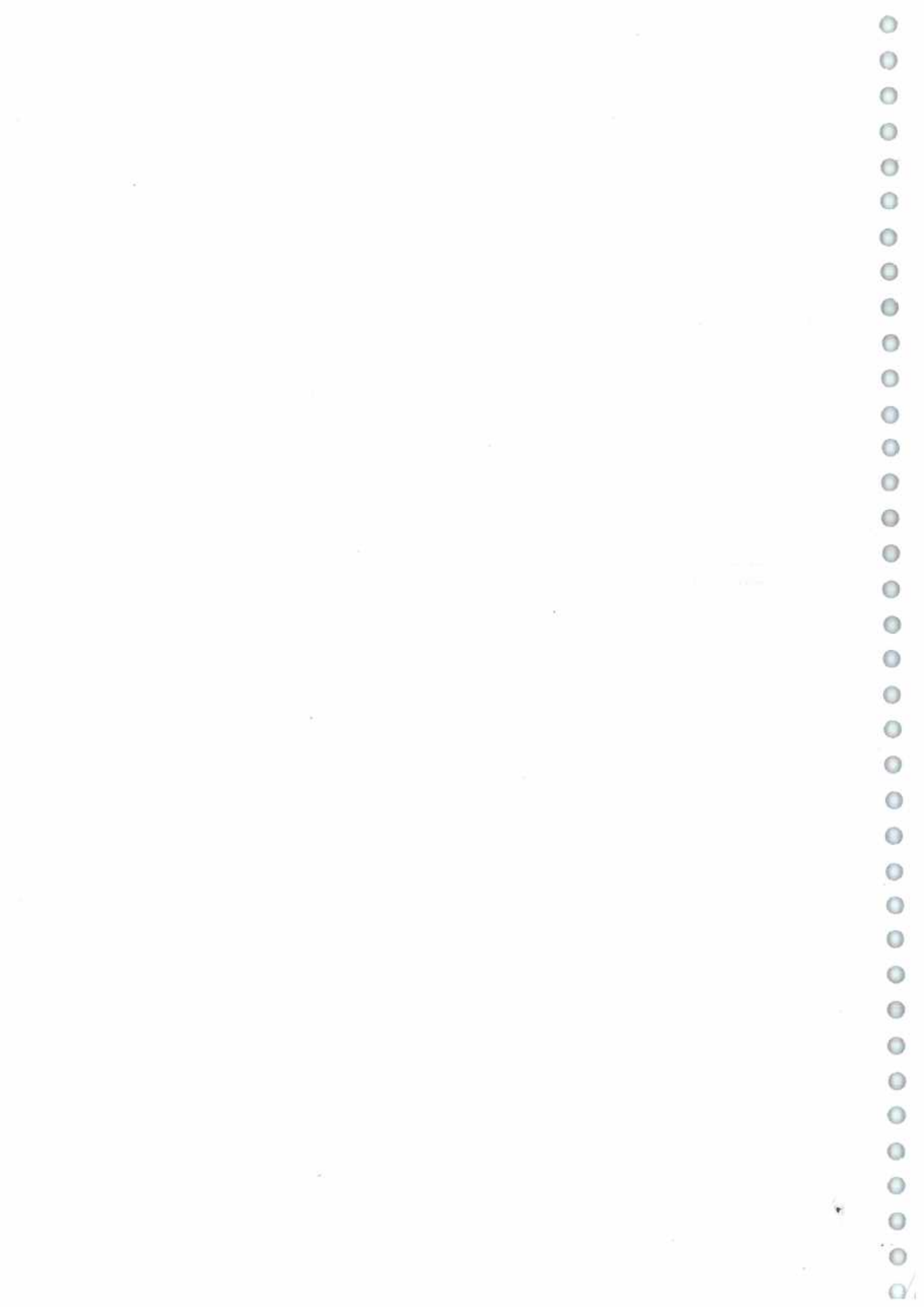
Submitted-

Name - Archana Kerketta

Roll No - 22

Session - 2020-22

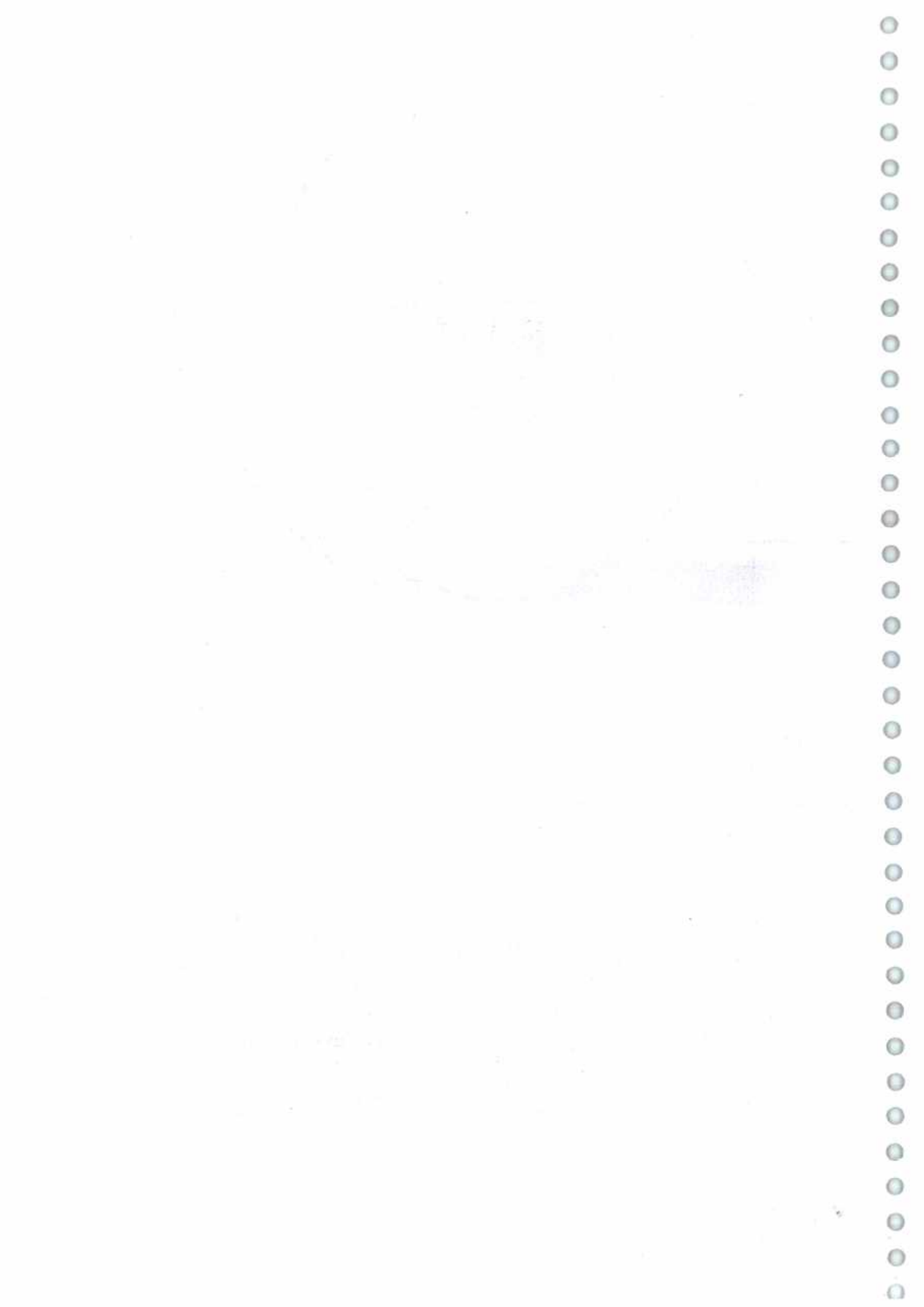


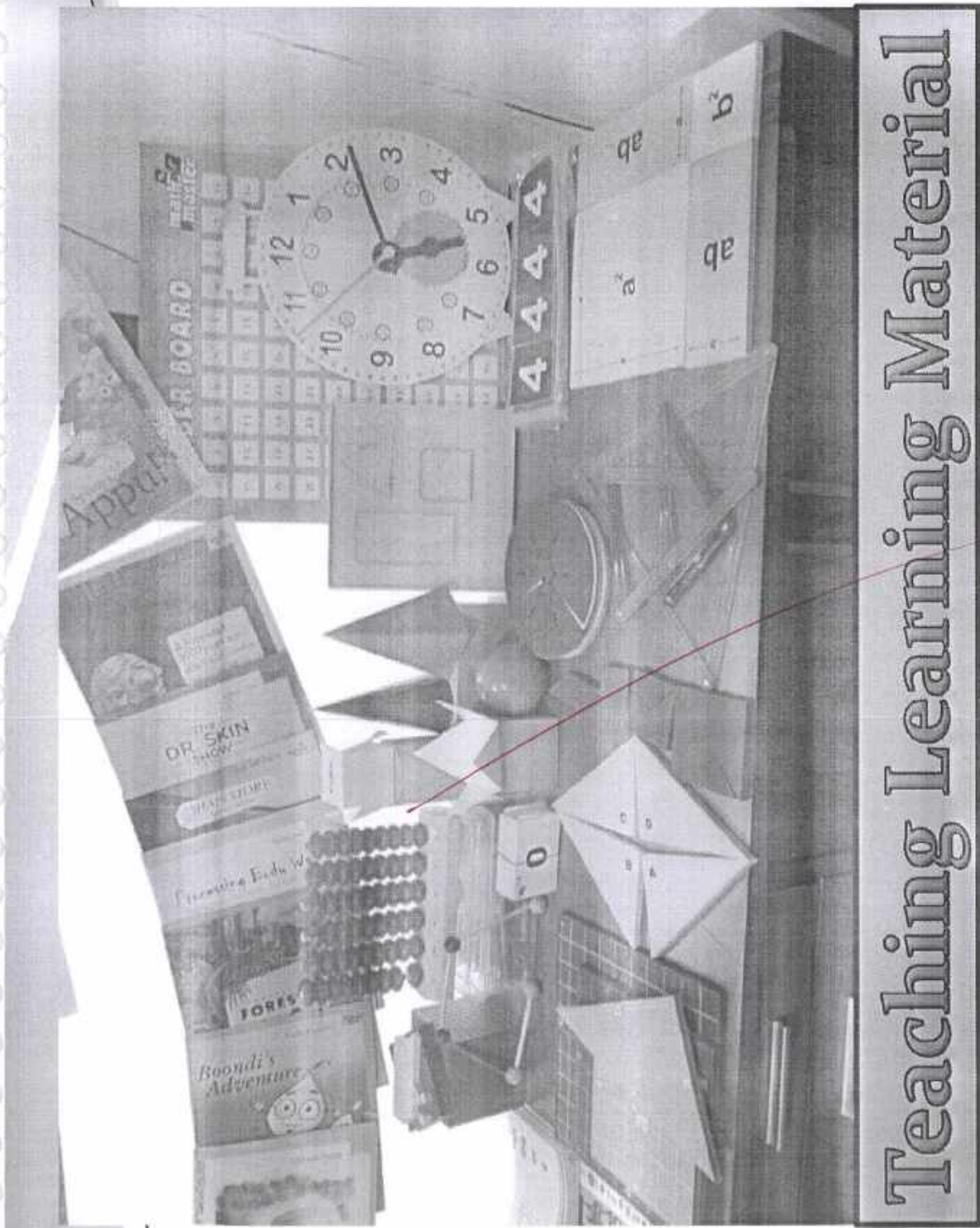


शिक्षण सहायक सामग्री (teaching

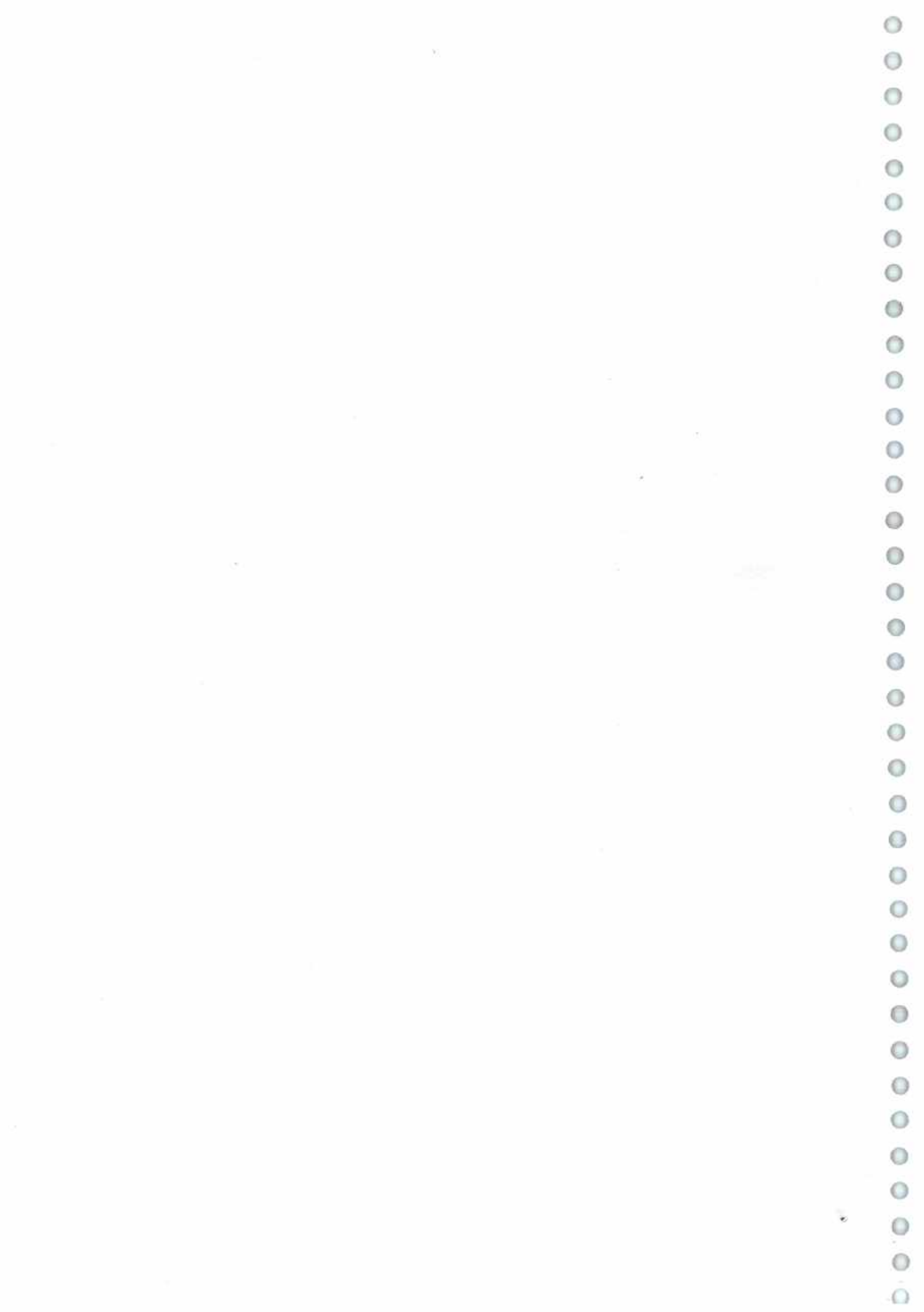
learning material- TLM)

- टीचिंग-लर्निंग मॅटेरियल (टीएलएम) का मतलब इंस्ट्रक्शनल मॅटेरियल है। यह शिक्षक द्वारा कक्षा में अधिक व्यापक और प्रभावी होने के लिए अपने शिक्षण को बढ़ाने के लिए उपयोग की जाने वाली कोई भी सामग्री है।
- शिक्षण-अधिगम सामग्री मानव या गैर-मानव संसाधन हो सकती है। वे कर सकते हैं चेतन और निर्जीव भी हो।
- शिक्षण-अधिगम सामग्री शिक्षक या छात्र द्वारा आसानी से खरीदी या बनाई जा सकती है।



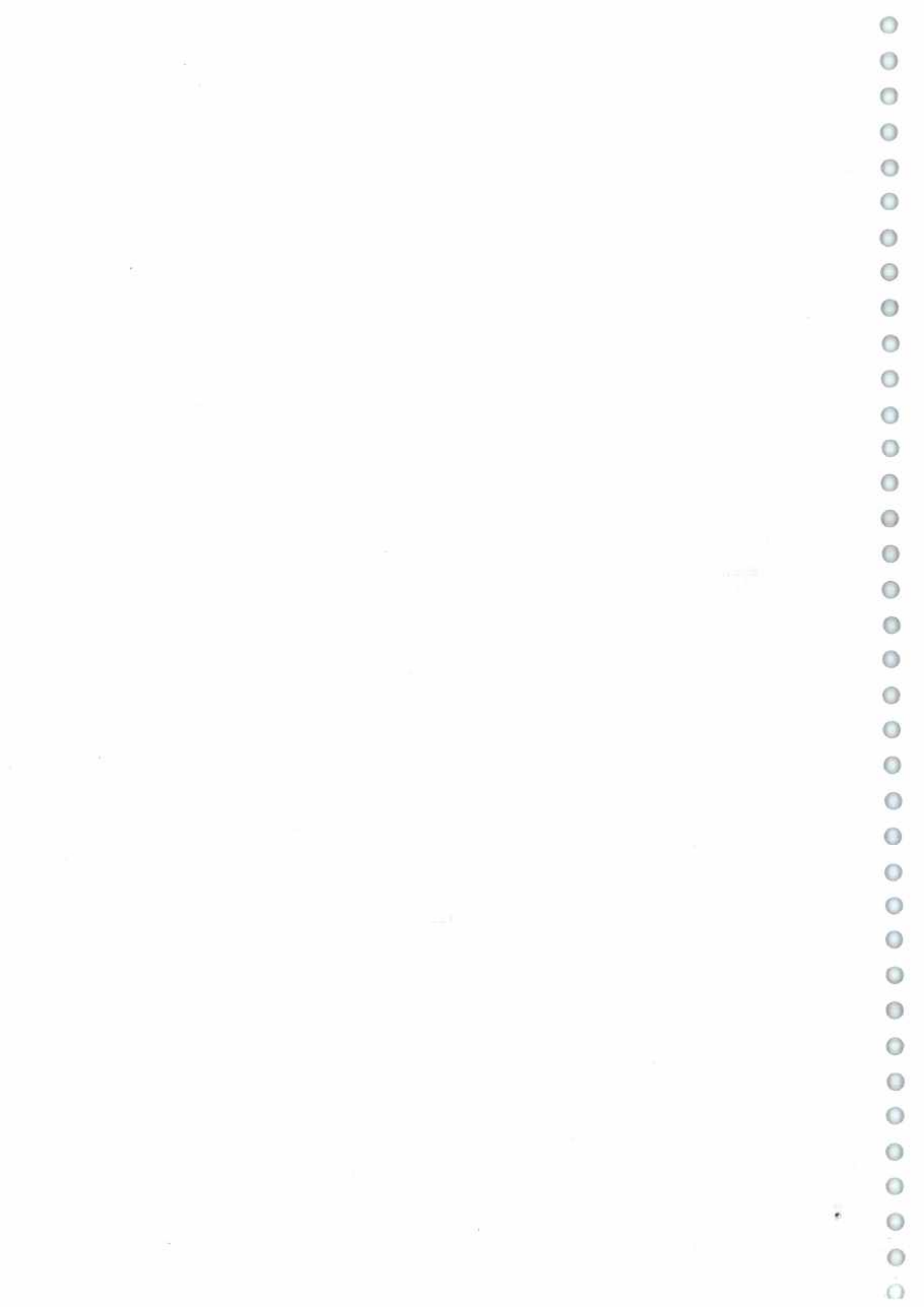


Teaching Learning Material



शिक्षण सामग्री के प्रकार

- प्रिन्ट सामग्री - पाठ्यपुस्तकें, पम्पलेट, हैंडा-आउट, अध्ययन-मार्गदर्शिकाएँ,
- मैनअल श्रव्य सामग्री - यूएसबी ड्राइव, कैसेट, माइक्रोफोन,
- दृश्य सामग्री - चार्ट, वास्तविक वस्तुएँ, फोटोग्राफ, ट्रान्सपैरेन्सी
- श्रव्य-दृश्य सामग्री - स्लाइड, टेप, फिल्में, टेलीविजन, मल्टिमिडिया, यू-ट्यूब
- इलेक्ट्रॉनिक वस्तुएँ - संगणक, ग्राफ दर्शाने वाले कैलकुलेटर, टैबलेट, स्मार्ट फोन

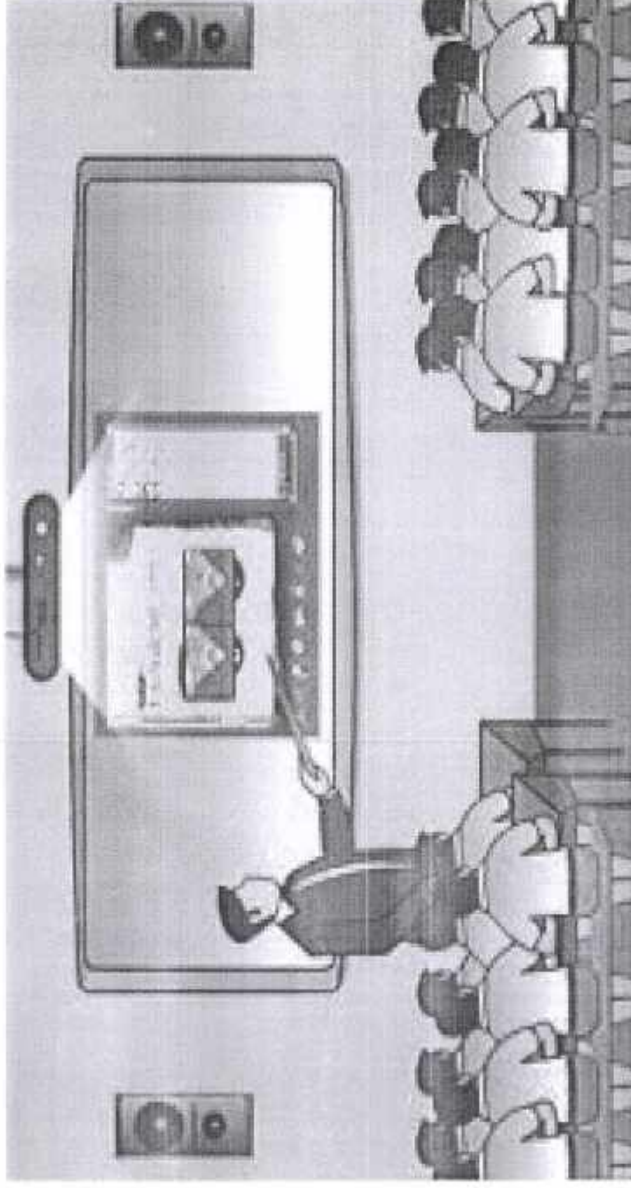


शिक्षण सामग्री की विशेषताएँ इस प्रकार हैं ।

- कम समय में अधिगम करना ।
- शिक्षण के समय सहायता मिलना
- बच्चे पढ़ने में रुचि लेते हैं ।
- कम समय में अधिक सीखना ।
- सक्रिय रूप से सीखना ।
- किसी भी पाठ को सरलता से सीखना ।



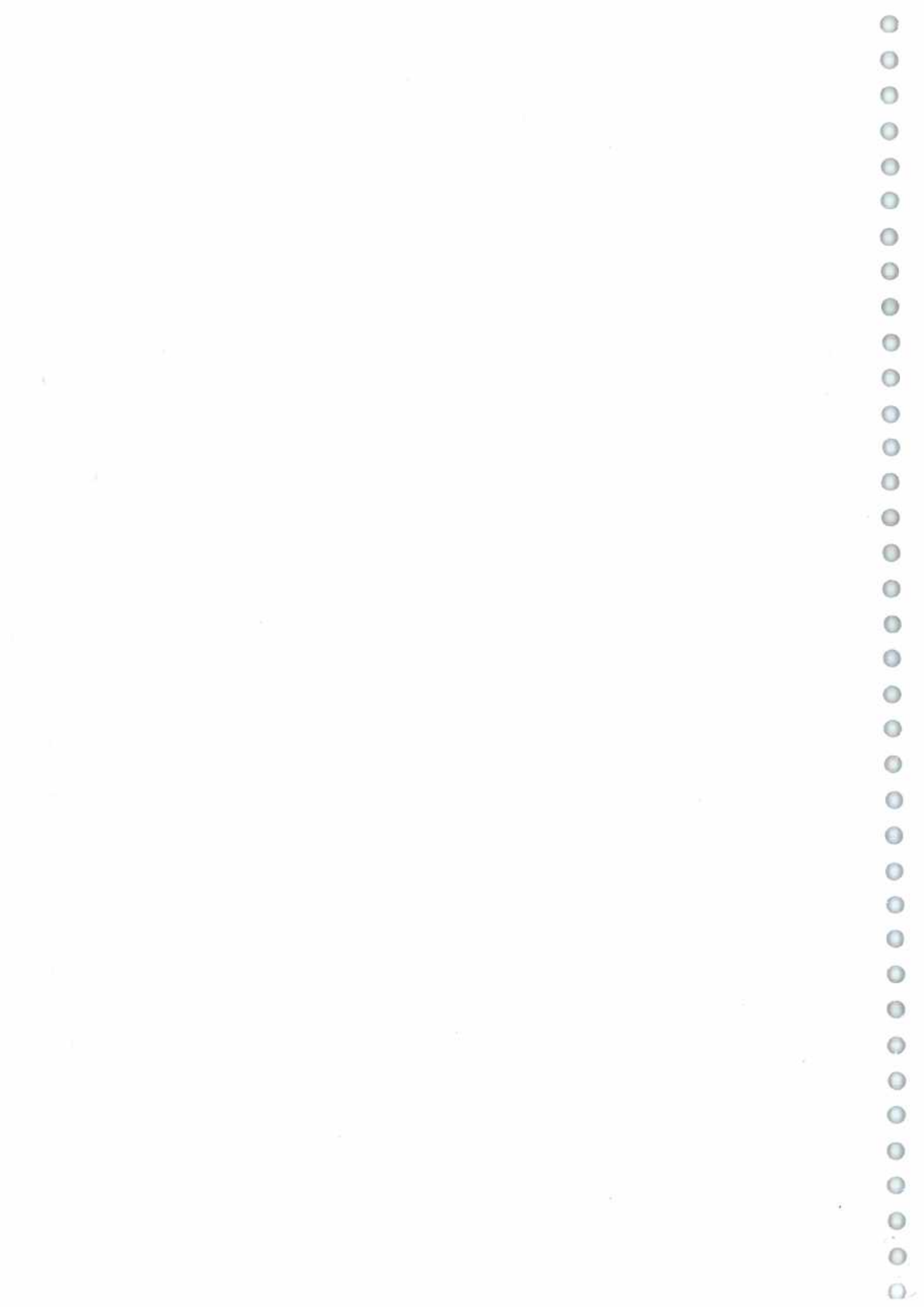
BHARATHI COLLEGE OF EDUCATION KANDRI RANCHI



Guided by:-
Asst. Pro .
Vivek Raj Jaiswal

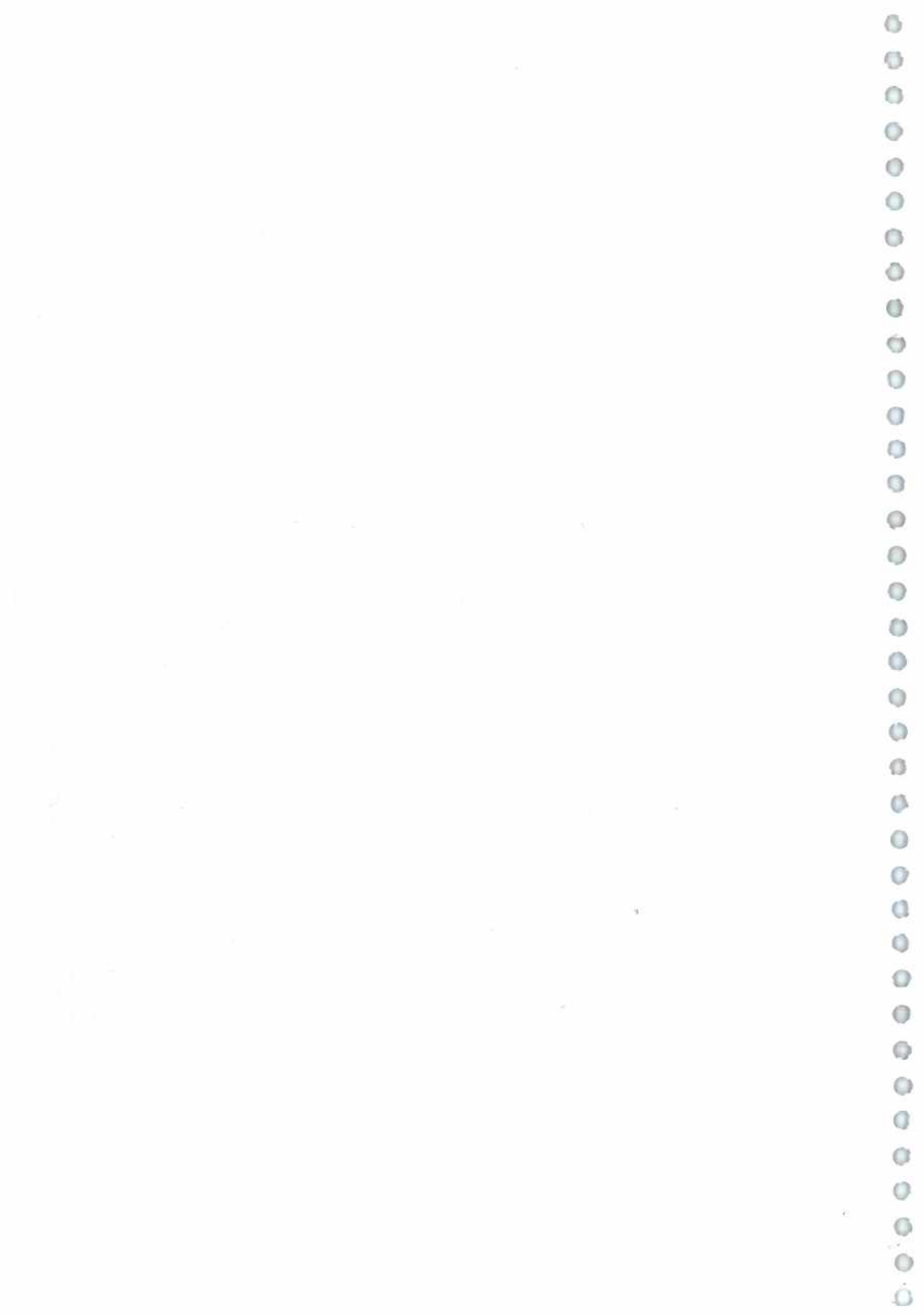


Submitted-
Name - Archana Kerketta
Roll No - 22
Session - 2020-22



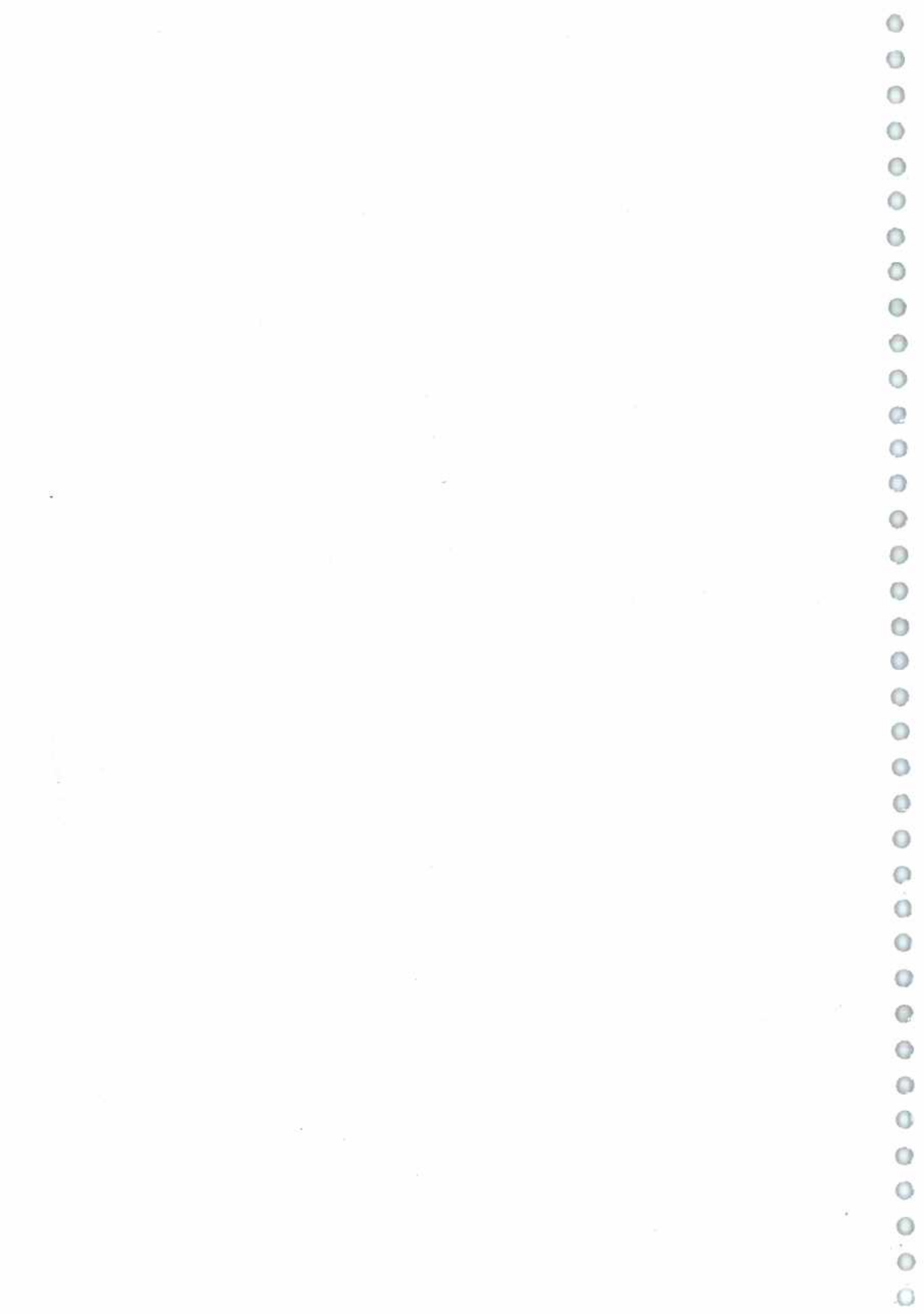
टेलीकांफ्रेंसिंग क्या है

- ▶ टेलीकांफ्रेंसिंग अनिवार्य रूप से एक लाइव, इंटरैक्टिव ऑडियो या ऑडियो-विजुअल मीटिंग है जो भौगोलिक रूप से बिखरे हुए प्रतिभागियों के बीच होती है।
- ▶ यहां, प्रतिभागी अपने टैबलेट, मोबाइल फोन, लैपटॉप, डेस्कटॉप कंप्यूटर और यहां तक कि विशेष रूप से डिज़ाइन किए गए तकनीकी-सक्षम मीटिंग रूम का उपयोग करके दूरसंचार नेटवर्क के माध्यम से संवाद करते हैं।



टेलीकांफ्रेंसिंग के प्रकार क्या हैं?

- ▶ ऑडियो टेलीकांफ्रेंसिंग: एक आवाज-केवल विकल्प। आप इस या तृतीय-पक्ष टेलीकांफ्रेंसिंग सेवाओं के लिए अपनी स्वयं की थ्री-वे-कॉलिंग सेवा का उपयोग कर सकते हैं।
- ▶ इलेक्ट्रॉनिक व्हाइटबोर्डिंग: इसके लिए आपको डेटा और ऑडियो टेलीकम्युनिकेशन कनेक्शन की आवश्यकता होगी। इसे शुरू में एक विश्वसनीय दिखने वाली डिजिटल कक्षा बनाकर दूरस्थ शिक्षा में सहायता के लिए डिज़ाइन किया गया था।



टेलीकांफ्रेंसिंग के प्रकार क्या हैं?

- ▶ वीडियो टेलीकांफ्रेंसिंग: एक लाइव, विजुअल कनेक्शन जो विभिन्न स्थानों के बीच पूर्ण-गति छवियों के साथ क्रिस्टल-क्लियर ऑडियो प्रसारित करने के लिए इंटरनेट का उपयोग करता है।
- ▶ कंप्यूटर टेलीकांफ्रेंसिंग: दो या दो से अधिक कंप्यूटरों के बीच लिखित संचार, कीबोर्ड इनपुट और एक सामान्य एप्लिकेशन का उपयोग करना।

टेलीकांफ्रेंसिंग के लाभ

- ▶ टेलीकांफ्रेंसिंग के साथ यात्रा व्यय पर बचत करें, क्योंकि आपको बैठक में भाग लेने के लिए अपना कार्यालय या घर छोड़ने की आवश्यकता नहीं होगी। इसलिए टेलीकांफ्रेंसिंग से आपका समय भी बचता है, जिसे आप महत्वपूर्ण कार्यों को पूरा करने में खर्च कर सकते हैं।
- ▶ दूरस्थ क्षेत्रों में उपस्थित लोग भी सम्मेलनों में भाग ले सकते हैं। यह कर्मचारी उपस्थिति, जुड़ाव और उत्पादकता में सुधार करता है। आप डायल-इन एक्सेस टेलीकांफ्रेंसिंग सेवाओं के साथ भी अल्प सूचना पर बैठकों और तदर्थ कर्मचारी चर्चाओं को शेड्यूल कर सकते हैं।

